राजभाषा विशेषांक

जल विकास
Jal Vikas

त्रैमासिक पत्रिका | खण्ड-27 | अक्तूबर 2018

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की आंतरिक पत्रिका
(Inhouse Bulletin of National Water Development Agency)

हिन्दी पखवाड़े के उद्‌घाटन समारोह की झलकियां

"जल ही जीवन है, इसका संरक्षण करें"

इस अंक में

संदेश एवं अपील

- महानिदेशक महोदय की ओर से
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) का संदेश
- निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा संपादकीय

लेख

- जल संकट की समस्या का समाधान जरूरी है एवं जल नहीं बचा तो जीवन भी नहीं बचेगा
  श्री साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार–II, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल
- भाषा की प्रकृति और संरचना
  श्री अनिल कुमार द्विवेदी, हिन्दी अनुवादक, नई दिल्ली

तकनीकी सारसंग्रह

- प्रशिक्षण/संगोष्ठी,/सम्मेलनों में भागीदारी
- नियुक्ति/पदोन्नति/सेवानिवृत्ति/शोक का विवरण

रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

- महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की अपील
- मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा–2018 का आयोजन
- मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2018 का आयोजन
- मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2018 का आयोजन

कविताएं

- विनती, सलाह और चेतावनी – वहशी दरिंदों को
  श्री जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार, नई दिल्ली
- पर्यावरण
  श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा), नई दिल्ली

अन्य

- दिनांक 05.09.2018 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद का निरीक्षण
- क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा संबंधी निरीक्षण एवं बैठकें
- प्रेस कटिंग
- पाठकों की प्रतिक्रिया

महानिदेशक महोदय की ओर से

जल विकास का राजभाषा विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत है जिसमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) के सभी कार्यों की झलकियां चित्रित की गई हैं। रा.ज.वि.अ. अपने तकनीकी कार्यों के साथ–साथ राजभाषा संबंधी कार्य और इससे संबंधित अनुपालन करने में बहुत गर्व महसूस करता है। केवल मुख्यालय ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में पदाधिकारियों द्वारा हिन्दी संबंधी कार्य विशेष रूचि एवं निष्ठा से किए जा रहे हैं। मुझे आशा है कि जल विकास के इस विशेषांक का आप स्वागत करेंगे और यह आपकी रूचि के अनुकूल होगा।

इस अंक में रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख प्रकाशित किए गए हैं। आशा है कि ये लेख आपको पसंद आएंगे।

राजभाषा विशेषांक के ''तकनीकी सारसंग्रह'' में रा.ज.वि.अ. के तकनीकी कार्यों की प्रगति को दर्शाया गया है।

इस अंक में रा.ज.वि.अ. मुख्यालय एवं मुख्य अभियंता, उत्तर एवं दक्षिण तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा–2018 में कराई गईं विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में मेरे द्वारा जारी की गई अपील भी प्रस्तुत है। हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में आप सभी की भागीदारी के कारण ही हम इसे इतना अधिक सफलता पूर्वक संपन्न करते हैं।

वर्ष 2017–2018 में हिन्दी के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए ''राजभाषा वैजयंती'' अन्वेषण सर्किल, ग्वालियर को और उनके अधीनस्थ प्रभागों ग्वालियर, झांसी, भोपाल और जयपुर को लघु राजभाषा वैजयंती से सम्मानित किया गया है। मेरी सभी को हार्दिक बधाई और आशा है कि रा.ज.वि.अ. के सभी कार्यालय हिन्दी के प्रति अपना उत्साह बनाए रखेंगे और प्रगति मार्ग पर आगे बढ़ेंगे।

रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों द्वारा जिन विभिन्न प्रशिक्षण/संगोष्ठी/सम्मेलन एवं कार्यशालाओं में भाग लिया गया उनका विवरण भी इस अंक में प्रस्तुत किया गया है एवं साथ ही रा.ज.वि.अ. में हुई नई नियुक्तियों, पदोन्नतियों व सेवानिवृत्तियों का विवरण भी दिया गया है। मैं सभी पदाधिकारियों की इन विशिष्ट उपलब्धियों से बहुत प्रसन्न हूँ। इस अंक के अंत में रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों की रोचक कविताएं प्रस्तुत हैं जो आप सभी को काव्य रस की अनुभूति कराएंगी।

अंत में आप सभी से मेरा अनुरोध है कि आपको यह अंक कैसा लगा, और इसको बेहतर बनाने के बारे में अपने विचार हम तक पहुंचाएं।

सधन्यवाद।

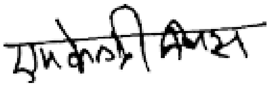

(एम. के. श्रीनिवास)
महानिदेशक
राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण

संदेश

जल जीवन है, इंसान भोजन के बिना कई दिन जीवित रह सकता है पर पानी के बिना नहीं। जल है तो कल है, जल नहीं तो कल नहीं। जीवन और प्रकृति सम्पूर्ण रूप से पानी पर ही निर्भर है इसलिए जल को जीवन कहा गया है। पानी के बिना जीवन की कल्पना करना असम्भव है।

पिछले कई वर्षों से पानी की कमी को निरंतर महसूस किया जा रहा है, जल संकट कल महासंकट न हो जाए, आज यह सोचने का वक्त आ गया है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण भविष्य में जल की कमी को दूर करने के लिए नदी जोड़ परियोजनाओं की रिपोर्टें तैयार करने के माध्यम से निरंतर प्रयासरत है। हम पानी का दुरूपयोग कैसे रोकें और केवल देश में ही नहीं पूरे संसार में इसके दुरूपयोग को अवश्य रोकना होगा। हमारी अपनी लापरवाही ने ही जल संकट को जन्म दिया है। नदियों ने नालों का रूप ले लिया है, झरने, तालाब, पोखर, झीलें सूखने लगे हैं, अगर अब भी इस संकट को हम समझ नहीं पा रहे हैं तो हमें ही इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

हर क्षेत्र में हो रहे जल के दुरूपयोग को रोकने के लिए देश का प्रत्येक नागरिक यदि जागरूक हो जाए और जल संरक्षण व जल प्रबन्धन में विशेष भूमिका निभाने लगे तो यह संकट निश्चित ही दूर हो सकता है। आज जल की कमी को देखते हुए तरह–तरह की आशंकाएं भविष्य के लिए की जा रही हैं। यदि आज हम सचेत नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब हम दुनिया के उन 90 करोड़ लोगों में शामिल होंगे जो पानी को तरसेंगे। इसका सबसे बड़ा कारण है औद्योगीकरण, शहरीकरण और लाइफ स्टाइल में पानी का बेतहाशा खर्च जिसे रोकने के उपाय हमें स्वयं खोजने होंगे।

आर के जैन

(आर. के. जैन)
मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

संपादकीय

पृथ्वी पर उपलब्ध समग्र जल में से लगभग 2.7 प्रतिशत जल स्वच्छ है जिसमें से लगभग 75.2 प्रतिशत जल ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा रहता है और 22.6 प्रतिशत भूजल के रूप में विद्यमान है, शेष जल झीलों, नदियों, वायुमण्डल, नमी, मृदा और वनस्पति में मौजूद है। जल संसाधन विकास और प्रबन्ध का संकट इसीलिए उत्पन्न होता है क्योंकि अधिकांश जल उपभोग के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता और दूसरे इसका विषमतापूर्ण स्थानिक वितरण भी इस संकट को और गहन कर देता है। जीवन के लिए जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है इसीलिए इसके किफायती प्रयोग तथा प्रबंधन पर अधिक बल दिया जा रहा है।

भारत में पिछले लगभग 60 वर्षों में जनसंख्या 33 करोड़ से बढ़कर 115 करोड़ हो गई है। देश के कई शहरों में औसतन एक घंटे से अधिक पानी की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। कई शहरों में टैंकर ही जल की आपूर्ति का साधन बन चुके हैं। पानी के लिये कतारों में लगना भी अब लोगों की दिनचर्या में शामिल हो चुका है। कई जगह पीने का पानी रेलवे की मदद से भेजा जा रहा है। भारत के गांवों में स्थिति और भी खराब है। इस परिप्रेक्ष्य में हमें नदी जोड़ परियोजनाओं के माध्यम से जल की कमी वाले क्षेत्रों में जल उपलब्ध कराने के लिए बड़ी तेजी से कदम उठाने होंगे।

भारत में जी.डी.पी. बढ़ने से आय में वृद्धि हो रही है और इससे लाइफ स्टाइल में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। आधुनिक लाइफ स्टाइल के कारण पानी की खपत में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है, जिससे जल संकट गहरा होता जा रहा है।

इसको ध्यान में रखकर ही रा.ज.वि.अ. ने अपनी योजनाओं के द्वारा इस जल संकट से उबरने के लिए कई अध्ययन किए हैं जिनके क्रियान्वित होने से भारत में जल की अधिकता वाले क्षेत्रों से जल की कमी वाले क्षेत्रों को पानी अंतरित करके इस संकट का समाधान निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

आशा है कि जल विकास का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और इस संबंध में अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं को आप हमें सूचित करेंगे।

(के. पी. गुप्ता)
निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी

जल संकट की समस्या का समाधान जरूरी है

*साली अरूण गंगाधर

जल संकट वर्तमान समय की एक गंभीर समस्या है। देश के कई राज्यों में वर्षा ऋतु के खत्म होते ही जल संकट गहराने लगता है और ग्रीष्म ऋतु आते–आते यह भयावह स्थिति का रूप लेने लगता है, क्योंकि हमने अपनी बूंद–बूंद सहेजने वाली पूर्वजों की जल–संस्कृति को तिलांजलि दे दी है। वर्तमान में जल की समस्या दोहरी है, एक तो पर्याप्त मात्रा में पेयजल नहीं है और दूसरा–जो बचा हुआ है, उसका रूप–रंग और स्वाद तेजी से बदल रहा है और इन परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी इन्सान ही है।

देखा जाए तो जो देश जितना विकसित व समृद्धशाली हुआ है, उतना ही जल समृद्धि से वंचित है, क्योंकि दुनियां अपने प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के विकास से समृद्धि पाने की राह पर चल रही है, जबकि उसे प्राकृतिक संसाधनों के पोषण के साथ इस राह पर बढ़ना चाहिए। वर्तमान में पानी की समस्या बारहमासी बन चुकी है और हमारा समाज भी इससे कोई सबक लेने को तैयार नहीं है, जबकि यही समय है पानी का मूल्य समझने, समझाने, सहेजने के तौर–तरीके जानने का और अपने पूर्वजों के बताए हुए रास्ते पर चलने का जिससे कि बूंद–बूंद पानी बचाने के संकल्प के साथ हम सभी अपनी धरती को जल समृद्ध बना सकें।

वर्षा जल का संचयन जल संकट से निपटने का सबसे कारगर तरीका है। कहावत है कि बूंद–बूंद से सागर भरता है उसी तरह रेनवाटर हार्वेस्टिंग तकनीक द्वारा बारिश की बूंदों को सहेजने वाली कुछ ऐसी सराहनीय कोशिशें हैं, जिनके द्वारा अनेक व्यक्तियों ने जल संकट की गहराती समस्या पर काबू पाया है। इसमें पहला उदाहरण, राजकोट गुजरात के 63 वर्षीय श्याम जी जाधव का है जो कि एक किसान हैं, वे कम पढे–लिखे हैं, लेकिन जल–संरक्षण के उनके प्रयास किसी वैज्ञानिक तकनीक से कम नहीं हैं। उनकी सौराष्ट्र लोकमंच संस्था ने साधारण वर्षा जल–संरक्षण संयंत्रों का प्रयोग कर समूचे गुजरात के लगभग 3 लाख कुओं ओर बोरवेलों को बारिश के पानी से पुनर्जीवित कर दिया है।

इसी तरह राजस्थान में जयपुर के पास लापोडिया गांव के लक्ष्मण सिंह ने भी चौका तकनीकी के तहत 10 फीट चौड़े और 10 फीट गहरे तालाबों की श्रृंखला बनाकर खेतों को हरा–भरा कर दिया था। उनके इस कार्य हेतु उन्हें वर्ष 2007 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा जल–संग्रहण पुरस्कार प्रदान किया गया था। राजस्थान के अलवर और महाराष्ट्र के रालेगॉव सिद्धि में भी लोगों ने अपने साधनों और श्रम से वर्षा के जल के संग्रह की अनेक क्षेत्रीय छोटी–छोटी योजनाओं को कार्यान्वित करके अपने क्षेत्र की कायापलट कर दी है। उन्होंने जल–संग्रहण के लिए छोटे–छोटे बांध और सरोवर बनाकर वर्षा के पानी को व्यर्थ बहने से बचाया और उसका संग्रह किया। आज यह क्षेत्र हरी–भरी धरती और लहलहाती फसलों से समृद्ध है।

इसी तरह मध्य प्रदेश के दतिया प्रखंड का हमीरपुर गांव भी जल संसाधन व प्रबंधन तकनीक से वर्षा जल संचित कर जल संकट से मुक्ति पा चुका है। इसके लिए गाँव वालों ने एक बड़े से तालाब का निर्माण कर उसमें वर्षा जल संचित कर गांव के भूजल स्रोतों को इतना जल से भर दिया कि वहां पर पानी के लिए अन्य स्रोतों पर निर्भरता खत्म हो गई है। हमीरपुर की जल–संरक्षण की सफलता से प्रेरित

*प्रारूपकार, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल

होकर पड़ोसी गांवों ने भी वर्षा जल–संचयन तकनीकी को लागू करके जल संकट से मुक्ति पा ली है। वर्षा जल–संचयन की इन तकनीकों के सुखद परिणामों से प्रेरित होकर झारखंड सरकार ने भी राजधानी रांची समेत राज्य के कई शहरों में वर्षा जल–संचयन को अनिवार्य कर दिया है।

जल–संरक्षण द्वारा जल को सहेजने के मामलों में यदि विदेशी देशों से प्रेरणा ली जाए तो इसमें इजराइल दुनिया का शीर्ष देश है। यह देश जल स्वउद्यमिता अर्थात जल–संरक्षण के क्षेत्र आत्मनिर्भरता विकसित करने का सबसे अच्छा उदाहरण है, क्योकि यहां पर जल के स्रोत चाहे वो भूजल हो, सतह पर मौजूद जल हो या दूषित जल, सभी पर सरकार का अधिकार है और जल को लोगों तक पहुचाने के लिए निजी व सार्वजनिक दोनों ही उपक्रमों की मदद ली जाती है, जबकि भारत में स्थिति इसके विपरीत है। यहां सिर्फ 10 से 15 फीसदी जलीय स्रोतों पर ही सरकार का आधा–अधूरा नियंत्रण है, शेष बचे हुए जल के अन्य सभी स्रोत लोगों के उपयोग व दुरूपयोग के लिए खुले हैं। इसके कारण पानी की बरबादी होती हैं। आंकडों के मुताबिक भारत में घरों और उद्योगों से निकलने वाले सिर्फ 30 फीसदी दूषित पानी का ही शोधन किया जाता है और शेष बचे पानी को नदियों व नहरों में बहा दिया जाता है। इससे प्राकृतिक संसाधन दूषित होते हैं और बीमारियां फैलती हैं।

जबकि सिंगापुर जैसे देशों में जल कंपनियां दूषित जल का शोधन करके 'न्यू वॉटर' बना रही हैं, जिसे उद्योगों, जनोपयोगी सेवाओं व शहरी निर्माण में इस्तेमाल किया जाता है। इसी तरह हमारे देश में भी दूषित जल को शोधित करके इसे एक व्यापार का रूप दिया जा सकता है। वैसे भी हमारे देश में बोतल–बंद पानी का व्यापार तेजी से फल–फूल रहा है जबकि ग्रामीण इलाकों व शहरी झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को पीने के लिए साफ पानी उपलब्ध नहीं है। इन लोगों को साफ पानी के लिए समय व धन, दोनों ही खर्च करने पडते हैं। अतः ट्यूबवेल लगाकर और जल आपूर्ति संयंत्र बनाकर छोटी–छोटी कंपनियां ऐसी सुरक्षित व सस्ती जल–विवरण प्रणाली विकसित कर सकती हैं, जिससे जल उपक्रमों और गरीब उपभोक्ताओं दोनों को फायदा पहुंच सके।

जल–संरक्षण के मामले में जापान ने भी अपने देश में सफल प्रयोग किए हैं। सभी जानते हैं कि टॉयलेट फ्लश करने में पानी की सबसे अधिक बरबादी होती है। फ्लश टैंक के आकार के आधार पर प्रत्येक फ्लश के साथ पांच से सात लीटर पानी बरबाद होता है। इसे रोकने के लिए जापान ने एक नया तरीका अपनाया है। वहां की एक कंपनी ने शौचालय के फ्लश टैंक के ऊपर ही हाथ धोने के लिए वॉश बेसिन लगवा दिए हैं जिससे हाथ धोने के बाद यह पानी सीधा फ्लश टैंक में ही चला जाता है और टॉयलेट फ्लश करने के लिए इसका इस्तेमाल होता है।

इसी तरह अमेरिका में भी जल–संरक्षण से संबंधित कुछ प्रयोग किए गए। वहां पिछले कई वर्षों से अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया सूखे की चपेट में है। इस समस्या से निजात पाने के लिए वहां के स्थानीय निकाय ने "टॉयलेट टू टैप" नाम से वेस्ट मॅनेजमेंट की एक परियोजना शुरू की। परियोजना के तहत लोगों के घरों से निकलने वाले दूषित जल का शतप्रतिशत शोधन होता है। इस तकनीक में तीन प्रक्रियाओं के जरिए दूषित जल को पीने लायक पानी में बदला जाता है। यह संयंत्र सीवेज से रोजाना 37 करोड लीटर शुद्ध जल बना रहा है और यह पानी शुद्धता के अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरा उतरता है।

वर्तमान में हमारा देश भी जल संकट के उस दौर से गुजर रहा है जिसे हमारी पीढ़ी से पहले की किसी पीढ़ी ने नहीं देखा था। अतः जरूरत इस बात की है कि देश में जल–संरक्षण व जल–शुद्धिकरण के विविध प्रयास किए जाएं क्योंकि इसके अलावा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं है।

जल नहीं बचा तो जीवन भी नहीं बचेगा

ब्रह्मांड में पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहां जीवन है और जीवन का आधार है जल। सभी जैविक और अजैविक जीवधारियों के जीवन के अस्तित्व के लिए जल आवश्यक है। इसके बिना जीवन असंभव है। प्रकृति का संचालन पंच तत्वों से होता है। पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि तत्वों सहित समस्त जीवों, पेड़–पौधों और वनस्पतियों का पोषण जल से ही होता है। जब सृष्टि का निर्माण हुआ तो पहला जीव जल में ही उत्पन्न हुआ। इससे जल की महत्ता स्पष्ट है। हम जानते हैं कि मानव जाति की सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ। नदियों के तटों से ही हमारी सभ्यताएं उत्पन्न और विकसित हुईं। पहले आबादी कम थी, जल का उपयोग और उपभोग सीमित था किन्तु धीरे–धीरे विश्व की आबादी तेजी से बढ़ी और जल का अंधाधुंध दोहन किया जाने लगा। आज समूचा विश्व पेयजल संकट से जूझ रहा है। शहरीकरण बढ़ने से पानी की खपत बढ़ रही है और प्राकृतिक जल स्रोत सूखने लगे हैं। नदियों और जलाशयों में प्रदूषण बढ़ने से उनका जल पीने योग्य नहीं रहा है। भारत में मांग के अनुपात में जल की उपलब्धता बहुत कम है। अभी से जल बचाने के ठोस उपाय नहीं किये गए तो आने–वाले दिनों में स्थिति और भी भयावह हो सकती है।

भौतिक सुखों की चाह में मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है। उद्योग और विकास के नाम पर जमीन से जितना जल हम दोहन कर रहे हैं, उसके अनुपात में हम रीजार्च के लिए प्रकृति को नहीं लौटा रहे हैं। पेड़ों की जड़ों से जल जमीन में जाता है उसमें कमी आई है, परन्तु इसके प्रति लोगों में जागरूकता की कमी है। जिस तरह स्वच्छता अभियान देश में चल रहा है, वैसे ही जल संसाधन के विभिन्न उपायों पर काम करने की आवश्यकता है।

देश में परम्परागत जल स्रोतों को हमें विकसित करने की आवश्यकता है। देश के अनेक राज्य आज सूखे की विकराल समस्या से जूझ रहे हैं। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और तमिलनाडु के अनेक जिलों में सूखा है। पानी के लिए वहां त्राहि–त्राहि मची हुई है। ग्रामीण अंचलों में लोग मीलों दूर से पानी लाने के लिए विवश हैं। मध्य प्रदेश में 23 जिलों में जल संकट पैदा हो गया है। ज्ञातव्य है कि नई दिल्ली में 2004 में एक सम्मेलन हुआ। इसमें 76 देशों के 300 से ज्यादा जल कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। सम्मेलन में आए सुझाव इस प्रकार हैं "पेयजल मनुष्य" का मौलिक अधिकार है तथा इस अधिकार का संरक्षण किया जाना चाहिए। विश्व में किसी भी स्थान पर जल का निजीकरण नहीं किया जाना चाहिए। जल संसाधन का व्यवसायीकरण संपूर्ण विश्व के लिए घातक है। विश्व में पेयजल सीमित है। इसकी सर्वउपलब्धता को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक पेयजल स्रोतों का विवेकपूर्ण प्रबंधन किया जाना चाहिए। देश में सामान्य जल वितरण प्रणाली का प्रभारी बनाया जाए जिससे आम आदमी को पीने के पानी की आपूर्ति हो सके। जल स्रोतों के दोहन तथा पेयजल वितरण को निजी हाथों में नहीं जाने दिया जाए। "नदी किनारे स्थापित होने वाले उद्योगों से वायु और ध्वनि प्रदूषण नदियों के पानी को दूषित कर रहा है। उद्योग का कचरा नदियों में जा रहा है वायु और ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ रहा है। विकास का अर्थ सिर्फ निर्माण को बढ़ावा देना नहीं है। अब स्मार्ट सिटी बन रही है इसके लिए हजारों पेड़ों की बलि दे दी जाएगी। सड़क निर्माण के लिए हजारों पेड़ काट दिये जाते हैं। वर्षा जल भूमि के भीतर नहीं जा पाता हैं और भूजल स्तर धीरे–धीरे कम होता रहता है। पिछले अनेक वर्षों से भूजल स्तर में निरंतर गिरावट आ रही है।

भाषा की प्रकृति और संरचना

*अनिल कुमार द्विवेदी

भाषाविज्ञान के संदर्भ में भाषा के सहज एवं सरल स्वभाव तथा नैसर्गिक गुण को भाषा की प्रकृति कहते हैं। भाषा का गहन एवं व्यावहारिक संबंध समाज से ही होता है। वह समाज में रहकर ही मानव एवं अन्य प्राणियों को प्राप्त होती है। भाषा किसी की पैतृक संपत्ति नहीं है। इसे समाज में मानव परस्पर अनुकरण एवं सामाजिक व्यवहार से प्राप्त करता है एवं अर्जित करता है। भाषा सदैव परिवर्तित होती रहती है। यह एक प्रचलित कहावत 'कोस–कोस पर पानी बदले और चार कोस पर बानी, को चरितार्थ करती है। वह किसी के बंधन में विकसित नहीं होती है। अपितु उसका प्रवाह नैसर्गिक एवं प्राकृतिक होता है। अतः भाषा के विविध रूपों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

1. भाषा एक सामाजिक संपत्ति है।
2. भाषा परंपरागत वस्तु है।
3. भाषा अर्जित संपत्ति है।
4. भाषा परिवर्तनशील होती है।
5. भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।
6. भाषा मानव जीवन से पोषित होती है।
7. भाषा भाव–संप्रेषणीयता का सर्वश्रेष्ठ साधन है।
8. भाषा सार्वजनिक संपत्ति है।
9. भाषा जटिलता से सरलता की ओर उन्मुख होती है।
10. भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न और नैसर्गिक होता है।

सामाजिक संपत्ति–भाषा का गहन संबंध समाज से है। कोई भी भाषा उस भाषा–भाषी समाज में रहकर ही सीखी जाती है, क्योंकि कोई भी बालक किसी भाषा को सीख कर जन्म नहीं लेता बल्कि जन्म के उपरांत जिस भाषा–भाषी समाज में उसका पालन–पोषण होता है, वह उसी भाषा को सहज रूप में सीख लेता है। उदाहरण के लिए, यदि भारत के दक्षिणी राज्य केरल के किसी स्थान पर कोई बच्चा जन्म लेता है और उसे जन्म लेते ही उत्तर भारत के किसी स्थान पर पालन–पोषण के लिए भेज दिया जाए तो वह बच्चा केरल में बोली जाने वाली 'मलयालम' न सीखकर बल्कि सहज रूप से उसी भाषा को सीखेगा और बोलेगा जिस भाषा–भाषी परिवार में उसका वर्तमान में पालन पोषण हो रहा हो।

परंपरागत वस्तु

भाषा एक परंपरागत वस्तु है क्योंकि प्रत्येक समाज में भाषा के प्रचार एवं प्रसार की एक अनवरत सुदीर्घ परंपरा रही है। और वर्तमान में भी समाज इस परंपरा का साक्षी एवं एक अंग बना हुआ है। उदाहरण के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश में जाकर देखें तो पता चलेगा कि वहां सैकड़ों वर्षों से वहां के निवासी परंपरागत रूप में अवधी भाषा बोलते चले आ रहे हैं और उनकी संतानें भी उसी अवधी भाषा का प्रयोग करती चली आ रही हैं। यही बात समृद्ध एवं समुन्नत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय भाषाओं कि लिए भी लागू होती है।

अर्जित संपत्ति

जहां भाषा हमें परंपरा से प्राप्त होती है, वहां हम भाषा का अर्जन भी करते हैं। क्योंकि जब एक भाषा–भाषी प्रदेश में कोई अन्य भाषा–भाषी व्यक्ति आकर रहने लग जाता है तब वह उस प्रदेश की भाषा को रात–दिन प्रयत्न करके सीख लेता है और उस प्रदेश के निवासी भी रूचि होने पर उसकी भाषा सीख लेते हैं। यही भाषा का अर्जन करना कहलाता है। उदाहरण के लिए भारत में पहले जब मुगल आकर बस गए तब भारतीयों ने उनकी फारसी भाषा भली प्रकार सीख ली और

*अनुवादक

मुगल भी हिन्दी बोलना सीख गए। भारत में जब ईस्ट इंडिया कंपनी अपना व्यापार करने आई तो वह अपनी भाषा और संस्कृति भी अपने साथ लाई जो आज भी भारतीय जनमानस में जीवित परिलक्षित हो रही है।

परिवर्तनशीलता

भाषा में सतत विकास होता रहता है। वह सौ वर्ष पहले जैसी थी वैसी ही आज नहीं रहती अपितु उसमें कहीं–कहीं तो पर्याय परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के लिए भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति ही ले लीजिए। उसका जो स्वरूप–ऋगवेद और पुराणादि वेदों में मिलता है वह आगे चलकर ब्राह्मण ग्रंथों, अरण्यकों, उपनिषदों में नहीं मिलता। फिर रामायण, महाभारत में आकर तो वह संस्कृत बिल्कुल परिवर्तित हो गयी। ऐसे ही प्राकृत तथा अपभ्रंष भाषाओं की दशा रही है, वे भी सतत परिवर्तित होती हुई लोक भाषा का परित्याग करके साहित्यिक भाषा बनीं और फिर लुप्त हो गईं। इसी तरह का परिवर्तन खड़ी बोली में भी देखा जा सकता है, खड़ी बोली धीरे–धीरे बोली की भाषा से परिवर्तित होते हुए शुद्ध एवं परिनिष्ठित भाषा बन गई।

भाषा का नैसर्गिक एवं अविच्छिन्न प्रवाह

भाषा बहता नीर है। नदी के प्रवाह की तरह भाषा का प्रवाह भी अविच्छिन्न एवं नैसर्गिक होता है। भाषा का प्रवाह प्राकृतिक होता है क्योंकि भाषा का निर्माण कभी किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं होता अपितु सम्पूर्ण समाज में व्यवहृत शब्द ही भाषा की सहज संपत्ति बना करते हैं। जैसे नदी कभी अपना मार्ग निर्माण स्वयं नहीं करती वैसे ही भाषा कभी अपना रूप निर्माण नहीं करती अपितु उसके प्रयोक्ता स्वाभाविक रूप में उसके रूपों का निर्माण किया करते हैं। चाकू, इंच, अपील, रिपोर्ट, मार्केट, टिकट, अचार, पीपा, मेंज, संतरा आदि शब्द हिन्दी भाषा में आकर मिल गए हैं। आज विभिन्न भाषाओं के शब्द हिन्दी में आकर मिल गए हैं और विभिन्न भाषाओं के शब्द हिन्दी में व्यवहृत हो रहे हैं। विविध शब्दों एवं उपयोगों को अपनाती हुई भाषा सदैव एक प्राकृतिक नदी की भांति सतत गतिशील रहती है उसकी अविच्छिन्न धारा में तनिक भी रूकावट नहीं पड़ती और वह अपने आस–पास की भाषाओं को भी अपनी सहज संपत्ति बनाती हुई उसी तरह बहती रहती है जिस तरह विभिन्न छोटी–छोटी नदियाँ नालों आदि के जल को लेकर कोई बड़ी नदी सतत प्रवाहित होती रहती है। यही कारण है कि भाषा का प्रवाह नैसर्गिक होता है।

अनुकरण से सीखना

भाषा कभी स्वतः नहीं आती वह संरक्षक या शिक्षक की ध्वनि का अनुकरण करने पर सीखी जाती है। बच्चे माता–पिता को जिस तरह बोलते हुए सुनते हैं उनकी ध्वनि को बोलने लगते हैं यथा–पानी। उदाहरण के लिए, 'मम'–ऐसे ही धीरे धीरे शब्दों से आगे बढकर और अनुकरण करते–करते वाक्यों का निर्माण करने लगतें हैं और बड़ा होकर उस भाषा की ध्वनियों का उच्चारण करते–करते उस भाषा को व्यवहार में लाने लगते हैं।

मानव जीवन से पोषित

भाषा मानव जीवन का अविष्कार है क्योंकि संसार के सभी मानवों में किसी न किसी भाषा का प्रचार देखा जा सकता है। पशु पक्षियों आदि में कोई भाषा प्रचलित नहीं थी। मानव ने अपने जीवन यापन के लिए अथवा जीवन के व्यवहार के लिए भाषा का निर्माण किया। मानव ने आरंभ से भाषा को सजाया है समुन्नत बनाया है तथा उसके अभावों को दूर किया है उसे सभी प्रकार से संपन्न बनाया है और उसमें सभी प्रयोक्ताओं की आवश्यकतानुसार संशोधन और परिवर्धन किया है। मानव ने ही संकेतों का अविष्कार एवं अन्वेषण किया है। मानव ने ही विविध शब्दों का निर्माण किया है। शब्द और अर्थ का संबंध मानव निर्मित ही है।

भाव संप्रेषणीयता का सर्वश्रेष्ठ साधन

भाषा के निर्माण से पूर्व मानव अपना व्यवहार कैसे करता था, कैसे अपनी इच्छाओं एवं भावनाओं को व्यक्त करता था तथा कैसे विचार–विनिमय करता था, आज इन प्रश्नों पर अनुमान लगाया जाता है कि वह पशुओं एवं पक्षियों की भांति केवल शारीरिक एवं कुछ अव्यक्त तथा निरर्थक ध्वनियों का प्रयोग करता रहा होगा। कुछ विद्वान यह मानने को तैयार नहीं हैं कि आदि मानव के पास भाषा नहीं थी। उनका विचार है कि मानव ने पशुओं एवं पक्षियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिगत योग्यताएं लेकर जन्म लिया है। अतः आदि काल में भी उसके पास भाषा थी, भले ही वह अविकसित और अपरिमार्जित रही हो अथवा अधिक सार्थक एवं सूक्ष्म चिंतन क्षमता से परिपूर्ण न हो। जो भी हो यह बात सभी विद्वान मानते हैं कि मानव ने भाषा को इसलिए अधिकाधिक विकसित किया है क्योंकि उसको दैनिक जीवन में इसकी परम आवश्यकता थी, इसके बिना उसका काम नहीं चलता था। भाषा के बिना वह अपनी इच्छाएं एवं भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाता था। भावों की अभिव्यक्ति के लिए शारीरिक चेष्टाओं एवं व्यापार को भी प्रयोग में लाया जाता है परन्तु देखा गया है कि ये चेष्टायें एवं व्यापार इतने सशक्त एवं समर्थ नहीं हैं जितनी कि भाषा होती है। भाषा के द्वारा सभी प्रकार के मनोभाव सरलता एवं सुगमता के साथ व्यक्त किए जाते हैं। यही कारण है कि भाषा भाव संप्रेषणीयता का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

सार्वजनिक संपत्ति

भाषा एक सार्वजनिक संपत्ति है, इसका उत्तरोत्तर विकास हुआ है और इस पर किसी एक जाति, धर्म, संप्रदाय अथवा परिवार का अधिकार नहीं है अपितु एक समाज में रहने वाले विविध जाति, धर्म, संप्रदाय और परिवार वाले व्यक्तियों में समान रूप से भाषा का प्रचार एवं प्रसार देखा जाता है। यदि कोई व्यक्ति एक भाषा क्षेत्र को छोड़कर किसी दूसरे भाषा क्षेत्र में रहने लगता है तो एक दो पीढी के उपरांत यह देखा जाता है कि उस परिवार के व्यक्ति अपने पूर्वजों की भाषा को भूलकर उसी भाषा का व्यवहार करने लगते हैं जिस भाषा क्षेत्र में वे रह रहे हैं। इसी तरह भाषा प्रत्येक व्यक्ति को समाज में रहने पर सहज रूप से प्राप्त होती है और यदि वह प्रयत्न करे तो उस समाज की भाषा से भिन्न अन्य भाषाओं को भी सीख सकता है। इसलिए भाषा पर किसी का पैतृक अधिकार नहीं होता और न ही वह किसी की निजी संपत्ति होती है जिसे दूसरा कभी ग्रहण न कर सके, अपितु प्रत्येक भाषा मानव के लिए सहज एवं स्वाभाविक रूप से प्राप्त होने वाली सार्वजनिक संपत्ति होती है।

जटिलता से सरलता की ओर उन्मुख

भाषा के क्रमिक विकास का अनुशीलन करने पर विद्वानों ने यह तथ्य निकाला है कि मानव सदैव भाषा के जटिल प्रयोगों को सरल बनाने की ओर उन्मुख रहा है। मानव की यह सहज प्रवृत्ति भी है कि वह कम से कम प्रयत्न में अधिक से अधिक बात कहना चाहता है अथवा कम से कम ध्वनि संकेतों में बडे से बड़े शब्द को व्यक्त करना चाहता है। उदाहरण के लिए,

पुस्तिका	पोथी
अट्टालिका	अटारी
मुद्गरिका	मुगरी
स्वर्णकार	सुनार

उपसंहार

अतः उपरोक्त व्यावहारिक मानकों के विश्लेषणों के आधार पर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि भाषा का उद्गम स्रोत समाज ही है जहां से भाषा का निर्माण भी होता है और यदि समाज इन व्यावहारों में शिथिलता लाता है तो भाषा मर भी जाती है। परन्तु इनके व्यावहारिक मानकों के अनुपालन और अनुसरण से यह सिद्ध होता है कि भाषा सदैव जटिलता से सरलता की ओर उन्मुख होती है।

जुलाई–सितम्बर, 2018 में समाप्त तिमाही का तकनीकी सारसंग्रह

रा.ज.वि.अ. ने राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के अधीन संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करने के लिए 30 लिंक (प्रायद्वीपीय घटक के अधीन 16 तथा हिमालयी घटक के अधीन 14 लिंक) अभिज्ञात किए हैं। सभी 30 लिंकों की पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट पूरी कर ली हैं तथा संबंधित राज्य सरकारों को परिचालित कर दी गई हैं।

संभाव्यता रिपोर्टें

प्रायद्वीपीय घटक के अधीन अभिज्ञात 16 लिंकों में से कर्नाटक से संबंधित 2 छोटे लिंकों नामतः बेदथी–वरदा और नेत्रावती–हेमावती लिंकों को छोड़कर अन्य सभी की संभाव्यता रिपोर्टें पूरी कर ली गई हैं।

रा.ज.वि.अ. ने हिमालयीन घटक के अधीन अभिज्ञात 14 लिंकों में से 2 लिंकों नामतः शारदा–यमुना तथा घाघरा–यमुना (भारतीय भाग) की संभाव्यता रिपोर्टें पूरी कर ली हैं परन्तु नेपाल के सीमा क्षेत्र में कार्य पूरा ना होने के कारण इन्हें परिचालित नहीं किया गया है। उपरोक्त के अतिरिक्त 7 लिंकों नामतः (i) यमुना–राजस्थान (ii) चुनार–सोन–बैराज लिंक (iii) सुबर्णरेखा–महानदी लिंक (iv) गंगा–दामोदर–सुबर्णरेखा लिंक (v) फरक्का–सुंदरबन लिंक (vi) राजस्थान–साबरमती लिंक (vii) गंडक–गंगा लिंक से संबंधित भारतीय भाग में सर्वेक्षण एवं अन्वेषण तथा संभाव्यता रिपोर्ट के प्रारूप तैयार करने का कार्य पूरा कर लिया है। केन्द्रीय जल आयोग/पंचेश्वर विकास प्राधिकरण द्वारा पंचेश्वर बांध का कार्य पूरा होने के बाद शारदा–यमुना लिंक की संभाव्ता रिपोर्ट की समीक्षा की जाएगी। सोन बांध गंगा की सहायक नदियों की संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करने के लिए दूरस्थ संज्ञान नक्शों का प्रयोग करते हुए सर्वेक्षण एवं अन्वेषण कार्य पूरा कर लिया है। एम.एस.टी.जी. (विकल्प–II मानस बांध के बिना) की संभाव्यता रिपोर्ट का प्रारूप पूरा कर लिया है तथा इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है। पूरी तरह से नेपाल के सीमा क्षेत्र में आने वाले कोसी – मेची लिंक तथा एम.एस.टी.जी. का विकल्प जोगी घोपा – तीस्ता – फरक्का की संभाव्याता रिपोर्ट तैयार करने का लक्ष्य अभी नहीं है।

एम. एस. टी. जी. (हिमालय घटक) लिंक को महानदी – गोदावरी (प्रायद्वीपीय घटक) लिंक को एकीकृत करने की संभावना तलाशी जा रही है।

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

तीन लिंक परियोजनाओं नामतः केन–बेतवा लिंक, दमनगंगा–पिंजाल लिंक तथा पार–तापी–नर्मदा लिंक की विस्तृत परियोजना रिपोर्टें पूरी कर ली हैं। 3 लिंकों के संबंध में संबंधित राज्यों के मध्य मतैक्यता स्थापित कराने/क्रियान्वयन के लिए माननीय मंत्री, (ज.सं.न.वि.वगं.स.), सचिव (ज.सं.न.वि.वगं.स.) तथा महानिदेशक रा.ज.वि.अ. भरसक प्रयास कर रहे हैं।

माननीय मंत्री, (ज.सं.न.वि.व गं.स.), ने उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश राज्यों के माननीय मुख्य मंत्रियों के साथ दिनांक 25.09.2017 को बैठक की तथा माननीय मुख्य मंत्री मध्य प्रदेश सरकार के साथ दिनांक 13.02.2018 एवं 18.05.2018 को बैठक की। केन–बेतवा लिंक परियोजना के क्रियान्वयन पर मतैक्यता के लिए समझौता ज्ञापन का प्रारूप मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश राज्यों को भेज दिया गया है। केन–बेतवा लिंक परियोजना के समझौता ज्ञापन पर विचार विमर्श करने के लिए सचिव (ज.सं.न.वि.व गं.सं.मं.) ने उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश सरकार के अधिकारियों के साथ दिनांक 23.04.2018 को बैठक की।

पार–तापी–नर्मदा तथा दमनगंगा–पिंजाल लिंक परियोजना के क्रियान्वयन के लिए समझौता ज्ञापन का प्रारूप महाराष्ट्र तथा गुजरात सरकारों को सितंबर 2017 में भेज दिया है। माननीय मंत्री (ज.सं.न.वि.व गं.सं.मं.) ने गुजरात तथा महाराष्ट्र सरकार के मुख्य मंत्रियों के साथ दिनांक 25.09.2017 को बैठक की। दमनगंगा – पिंजाल तथा पार – तापी – नर्मदा लिंक परियोजनाओं की स्थिति की समीक्षा करने के लिए माननीय मंत्री (ज.सं.न.वि.वगं.स.), ने दोनों राज्यों के

अधिकारियों के साथ 16 जनवरी 2018 को बैठक की। इन दो लिंक परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप देने के लिए सचिव (ज.सं.न.वि.व गं.स.), ने भी महाराष्ट्र तथा गुजरात सरकार के अधिकारियों के साथ दिनांक 20.04.2018 एवं 07.09.2018 को बैठक की।

महानदी तथा गोदावरी नदी बेसिनों से पथांतरित किए जाने वाले जल की मात्रा पर मतैक्यता नहीं हो पाई है, रा.ज.वि.अ. ने गोदावरी (इंचमपल्ली)– कावेरी लिंक द्वारा गोदावरी बेसिन के इंद्रावती उप बेसिन (गोदावरी जल विवाद अधिकरण के पंचाट के अनुसार छत्तीसगढ़ के अप्रयुक्त जल अंश) के अप्रयुक्त जल को कावेरी बेसिन में अंतरित करने के लिए वैकल्पिक अध्ययन किया है। संबंधित राज्य सरकारों से सहमति लेने के लिए तकनीकी संभाव्यता नोट परिचालित कर दिया है। तदनुसार, रा.ज.वि.अ. ने लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य आंरभ कर दिया है।

अंतः राज्यीय लिंक

रा.ज.वि.अ. को 9 राज्यों नामतः महाराष्ट्र, गुजरात, झारखंड, ओडिशा, बिहार, राजस्थान, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, तथा कर्नाटक से कुल 47 अंतः राज्यीय लिंक प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। रा.ज.वि.अ. ने इन 47 अंतः राज्यीय लिंक प्रस्तावों में से 36 लिंको की पूर्व संभाव्यता रिपोर्टें पूरी कर ली हैं।

बूढ़ी गंडक – नून – बया – गंगा लिंक तथा कोसी – मेची (अंतः राज्यीय लिंक) की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट पूरी कर ली है तथा बिहार सरकार को भेज दी गई है। तमिलनाडु की पोनय्यार (नेडुंगल–अनीकट) – पालार लिंक की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट भी पूरी कर ली है तथा इसे तमिलनाडु और कर्नाटक सरकार को भेज दिया है। महाराष्ट्र की वेनगंगा (गोसीखुर्द) – नलगंगा (पूरना–तापी), दमनगंगा (इकदारे) – गोदावरी लिंक तथा दमनगंगा – वैतरणा – गोदावरी (कदवादेव) लिंक परियोजनाओं की विस्तृरत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

तकनीकी बैठकों / सेमिनारों / प्रशिक्षण कार्यक्रमों / कार्यशालाओं मे भागीदारी

महानिदेशक रा.ज.वि.अ. तथा रा.ज.वि.अ. के अन्य अधिकारियों ने तिमाही के दौरान समय – समय पर इकत्तीस तकनीकी बैठकों, दो सेमिनारों, एक कार्यशाला और दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

संसदीय प्रश्नों / वी.आई.पी./ पी.एम.ओ./ पी.जी./ पी.एस. संदर्भों के उत्तर

तिमाही के दौरान 103 वी.आई.पी./ पी.एम.ओ./ पी. जी./ पी.एस. ग्राम संदर्भों तथा 26 संसदीय प्रश्नों / मामलों के उत्तर दिए गए।

पी.एम.के.एस.वाई.–ए.आई.बी.पी. के अंतर्गत नाबार्ड निधियन

पी.एम.के.एस.वाई. – ए.आई.बी.पी. के अंतर्गत वर्ष 2016 से 15 राज्यों, उत्तरी कोइल तथा पोलावरम परियोजनाओं को 15242.0247 करोड़ रूपए संवितरित किए गए। इसमें से वर्ष 2018–19 की दूसरी तिमाही के दौरान 1556.2 करोड़ रूपए संवितरित किए गए।

रा.ज.वि.अ. की 32वीं वार्षिक सामान्य बैठक

माननीय मंत्री की अध्यक्षता में रा.ज.वि.अ. की 32वीं वार्षिक सामान्य बैठक दिनांक 20.08.2018 को नई दिल्ली में हुई।

नदी जोड़ पर विशेष समिति

नदी जोड़ पर विशेष समिति की 15वीं बैठक दिनांक 20.08.2018 को हुई।

सबसे उपयुक्त वैकल्पिक योजना (उप समिति–II) अभिज्ञात करने के लिए प्रणाली अध्ययनों पर उप समिति

उप समिति II की 12वीं बैठक दिनांक 27.7.2018 को हुई।

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की दिनांक 20 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली में हुई बत्तीसवीं वार्षिक सामान्य बैठक एवं नदियों के अंतर्योजन पर विशेष समिति की पंद्रहवीं बैठक की झलकियां

हिन्दीं में तकनीकी काम करना सरल है, शुरूआत तो कीजिए

01.07.2018 से 30.09.2018 तक

नियुक्तियां

इस अवधि में सीधी भर्ती/प्रतिनियुक्ति द्वारा निम्नलिखित भर्ती की गई

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	प्रतिनियुक्ति/सीधी भर्ती	तैनाती का स्थान
1.	श्री अनुराग, आशुलिपिक श्रेणी–II	सीधी भर्ती 26.07.2018 (पूर्वा.)	मुख्यालय, नई दिल्ली
2.	श्रीमती प्रिया विज, आशुलिपिक श्रेणी–II	सीधी भर्ती 28.07.2018 (पूर्वा.)	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर
3.	श्री निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी–II	सीधी भर्ती 31.07.2018 (पूर्वा.)	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर
4.	श्री चेतन शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 13.08.2018 (पूर्वा.)	अन्वेषण प्रभाग–II, रा.ज.वि.अ., नासिक
5.	श्री सोहन कुमार, आशुलिपिक श्रेणी–II	सीधी भर्ती 07.09.2018 (पूर्वा.)	मुख्य अभियंता (उत्तर) रा.ज.वि.अ., लखनऊ

रा.ज.वि.अ. से पदोन्नति प्राप्त पदाधिकारी

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	पद एवं पदोन्नति की तिथि	तैनाती का स्थान
1.	श्री एन. जे. सरोदे, आशुलिपिक श्रेणी–I	निजी सचिव 03.07.2018	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नासिक
2.	श्री सी. पी. एस. सेंगर, कार्यपालक अभियंता	अधीक्षक अभियंता 13.07.2018	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना
3.	श्री जयराम, सहायक कार्यपालक अभियंता	कार्यपालक अभियंता 09.08.2018 (तदर्थ पदोन्नति)	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ
4.	श्री एन.पी. साहू सहायक निदेशक	उप निदेशक 09.08.2018 (तदर्थ पदोन्नति)	रा.ज.वि.अ. मुख्यालय नई दिल्ली
5.	श्री आर.के. गुप्ता, सहायक कार्यपालक अभियंता	कार्यपालक अभियंता 23.08.2018 (तदर्थ पदोन्नति)	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी
6.	श्री बी. रविचंदर, सहायक कार्यपालक अभियंता	कार्यपालक अभियंता 04.09.2018 (तदर्थ पदोन्नति)	अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

रा.ज.वि.अ. से सेवानिवृत्ति / त्यागपत्र / प्रत्यावर्तन प्राप्त पदाधिकारी

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	सेवानिवृत्ति/प्रत्यावासन की तीथि
1.	श्री जब्बार अली, अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	31.07.2018
2.	श्री अकादशी जेना, एम.टी.एस., अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना	31.07.2018
3.	श्रीमती आर.के.मुरगोडे, एम.टी.एस., अन्वेषण प्रभाग–I, रा.ज.वि.अ., नासिक	31.07.2018
4.	श्री कृष्णलाल, क.ले.अ., रा.ज.वि.अ., मुख्यालय, नई दिल्ली	30.09.2018
5.	श्री अमित रंजन दास, प्रधान लिपिक, अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता	30.09.2018

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की गतिविधियां
मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा 2018 का आयोजन

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय, नई दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में 14 सितम्बर, 2018 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के शुभारंभ समारोह में मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने महानिदेशक महोदय का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। तत्पश्चात महानिदेशक महोदय ने मुख्य अभियंता (मुख्यालय) और अन्य अधिकारियों के साथ दीप प्रज्वलन कर पखवाड़े का शुभारंभ किया। श्रीमती आशा ऑबराय, श्रीमती नलिनी मोहन, श्रीमती निर्मल सिंह, श्रीमती राधा, श्रीमती रीना वाधवा, श्री अनुराग, श्री विक्रम सिंह एवं श्री योगश ने वन्दे मातरम् की भावभीनी प्रस्तुत की।

सर्व प्रथम सहायक निदेशक राजभाषा ने पखवाड़े की रूपरेखा प्रस्तुत की। निदेशक तकनीकी एवं राजभाषा अधिकारी श्री के.पी. गुप्ता ने अपने सम्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी का प्रयोग निरन्तर बढ़ रहा है और अनुरोध किया कि इस पूरे पखवाड़े में केवल हिन्दी में कार्य करने का प्रयास करें जिससे इस पखवाड़े को सफल बनाया जा सके। जैसा हम बोलते हैं उसी प्रकार से लिखें। नोटिंग हो या पत्र उनकी भाषा सहज रूप से समझ में आने वाली हो तो बहुत ही अच्छा रहेगा। जैसे आपस में बातचीत करके काम को आगे बढ़ाते हैं वैसे ही फाइलों पर भी उसी बोल–चाल की हिन्दी को प्रयोग में लाकर काम को आगे बढ़ाना चाहिए।

मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने इस अवसर पर सभी को बधाई दी और कहा कि हिन्दी भाषा एक बहुत सरल और सहज माध्यम है और यह पूरे देश में आसानी से समझी और बोली जाती है। हिन्दी में दूसरी भाषाओं के ऐसे अनगिनत शब्द हैं जो देश की अन्य भाषाओं के साथ–साथ कई विदेशी भाषाओं से भी हिन्दी में इस प्रकार मिल चुके हैं कि आज उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। हिन्दी के माध्यम से पूरा देश अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। भारत सरकार के भी स्पष्ट आदेश हैं कि सरकारी काम–काज में सरल हिन्दी का प्रयोग किया जाए। कार्यालय में आप तकनीकी अनुभागों में काम कर रहे हों, प्रशासन में सभी मूल रूप से छोटे–छोटे पत्र, नोटिंग आदि हिन्दी में ही लिखने का अभ्यास करें। अंग्रेजी के शब्दों का उपयोग भी देवनागरी में लिखकर किया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि हैदराबाद में संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने अन्वेषण सर्किल का निरीक्षण किया। उप समिति ने भी यही कहा कि हमें अपना काम हिन्दी में धीरे–धीरे इस तरह से बढ़ाना है जिससे हम इस विषय में तय किए गए लक्ष्य तक पहुंच जाएं। उप समिति ने सर्किल में हिन्दी में किए जा रहे काम की सराहना भी की। उन्होंने भी सबसे अनुरोध किया कि प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में भाग लें और पखवाड़े को सफल बनाएं।

महानिदेशक महोदय ने पखवाड़े की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं और कहा कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी में अच्छा कार्य किया जा रहा है। उन्होंने मुख्य अभियंता (दक्षिण) के रूप में हिन्दी में किए कार्य के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी अपने आप में एक बहुत सरल और स्पष्ट भाषा है और इसकी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है। हम और आप रोज़ बातचीत में इसका प्रयोग करते हैं अधिकांश बड़ी बैठकों में भी हिन्दी में वार्तालाप किया जाता है जो पहले नहीं होता था और सरकारी काम–काज हिन्दी में करना भी बहुत मुश्किल नहीं है। तकनीकी कार्यों तथा पत्राचार आदि में हिन्दीं का उपयोग किया जा रहा है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में बहुत अधिक काम–काज हिन्दी में किया जाता है। हिन्दी के सरल–सहज शब्दों को उपयोग में लाते हुए अपना कार्यालयी काम–काज करने का प्रयास पूरे मन से करें। इस अवसर पर उन्होंने अपील भी जारी की। (अपील अलग से प्रस्तुत)

पखवाड़े के शुभारंभ के साथ काव्य वाचन प्रतियोगिता

का आयोजन किया गया। अंत में राष्ट्रगान के साथ हिन्दी पखवाड़े का उद्‌घाटन समारोह समाप्त हुआ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिनमें रा.ज.वि.अ. के सभी पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इस पखवाड़े को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह प्रतियोगिताएं निम्नानुसार आयोजित की गईः

काव्य वाचन प्रतियोगिता 17.09.2018

दिनांक 17.09.2018 को काव्य वाचन प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता बहुत ही रोचक रही तथा इसमें श्रोतागण भी बहुत बड़ी संख्या में कविताओं का रसास्वादन करने पहुंचे। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्या.) एवं श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार हैः

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार	प्रथम
2	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
3	एस.के. तैलंग, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
4	आशा ऑबराय, निजी सचिव	प्रोत्साहन
5	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	प्रोत्साहन

प्रार्थनापत्र लेखन प्रतियोगिता 18.09.2018

(केवल चालकों एवं एम.टी.एस. के लिए)

दिनांक 18.09.2018 को प्रार्थना पत्र लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता विशेषतौर पर केवल चालकों एवं एम.टी.एस. कर्मचारियों के लिए आयोजित की जाती है। इसमें सभी पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री नरेन्द्र कुमार, निदेशक (प्रशासन) एवं श्री अफरोज आलम, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों का विवरण निम्नानुसार हैः

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	महेश कुमार, एम.टी.एस.	प्रथम संयुक्त
	महावीर सिंह, वाहन चालक	
2	परमिंदर सिंह नेगी, एम.टी.एस.	द्वितीय संयुक्त
	उमेश चन्द्र, एम.टी.एस.	
3	गोपाल दत्त, एम.टी.एस.	तृतीय संयुक्त
	के.एस. उपाध्याय, एम.टी.एस.	
4	भोपाल सिंह, एम.टी.एस.	प्रोत्सांहन
5	राजकंवर, एम.टी.एस.	प्रोत्सांहन

गीत, दोहा, चौपाई, अंताक्षरी प्रतियोगिता 20.09.2018

दिनांक 20.09.2018 को गीत, दोहा, चौपाई अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें गंगा समूह, यमुना समूह, कृष्णा समूह, सरस्वती समूह, कावेरी समूह, पांच टीमों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी एवं श्री रूपेश कुमार सिन्हा, निदेशक (वित्त) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार हैः

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
गंगा समूह	बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्या, प्रारूपकार	
	मोहम्मद इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	
	रजनी शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	
	एस. दुर्गाबाई, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	आशा ऑबराय, वरिष्ठ निजी सचिव	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	

कावेरी समूह	निर्मल सिंह, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
	राकेश कुमार शर्मा, उपनिदेशक	
	राम किशन, कनिष्ठ अभियंता	
	जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार	
	के.एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता	
	एन.पी.साहू, उपनिदेशक	
	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	
यमुना समूह	हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	राजकंवर, एम.टी.एस.	
	सुरेश कुमार, कनिष्ठ लेखाकार	
	आर बालकृष्णन, सहायक अभियंता	
	विक्रम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	के.के.श्रीवास्तव, उपनिदेशक	
	योगेश मलिक, अवर श्रेणी लिपिक	
कृष्णा समूह	शोभा रावत, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	डी.के. कार, अवर श्रेणी लिपिक	
	ए.के. जैन, उपनिदेशक	
	आर.के.खरबंदा, उपनिदेशक	
	चमन लाल, एम.टी.एस.	
	मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक	
	पी.आंजनेयुलु, सहायक अभियंता	
सरस्वती समूह	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	सत्य प्रकाश तोमर, कनिष्ठ अभियंता	
	शशि चंद्र मंगल, सहायक अभियंता	
	अनुराग, आशुलिपिक श्रेणी II	
	के.एस. उपाध्याय, एम.टी.एस.	
	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	
	सुरेश कुमार तैलंग, अवर श्रेणी	

वाद–विवाद प्रतियोगिता–24.09.2018

दिनांक 24.09.2018 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता बहुत रोचक रही तथा इसमें बहुत बढ़–चढ़ कर बड़ी संख्या में पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री अफरोज आलम, अधीक्षक अभियंता एवं श्री मुजफ्फर अहमद, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
2	आशा ऑबराय, वरिष्ठ निजी सचिव	द्वितीय संयुक्त
	बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता	
3	राम किशन, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
4	के.ए. नायुडु, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
5	आर. बालकृष्णन, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त

एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता – 26.09.2018

दिनांक 26.09.2018 को एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 40 के करीब शीर्षकों को चुना गया। हर शीर्षक की अलग–अलग पर्ची बनाई गई। प्रत्येक प्रतिभागी ने 2 पर्ची उठाई और एक शीर्षक को चुन कर दूसरी पर्ची वापस रख दी और चुने गए विषय पर एक मिनट का भाषण दिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती जानसी विजयन, निदेशक (एम.डी.यू.) एवं श्री मुजफ्फर अहमद, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	के.एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता	
	अनुराग, आशुलिपिक	
	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	

2	राधा, अवर श्रेणी लिपिक ईश्वर लाल मौर्या, प्रारूपकार हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता के.एस. उपाध्याय, एम.टी.एस.	द्वितीय संयुक्त
3	एन.पी.साहू, उपनिदेशक राम किशन, कनिष्ठ अभियंता जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार राजकंवर, एम.टी.एस.	तृतीय संयुक्त
4	बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता सुरेश कुमार, कनिष्ठ लेखाकार	प्रोत्साहन संयुक्त
5	विक्रम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक सुरेश कुमार तैलंग, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त

राजभाषा हिन्दी प्रश्नावली प्रतियोगिता – 28.09.2018

दिनांक 28.09.2018 को राजभाषा हिन्दी प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित की गई इसमें सरस्वती समूह, कावेरी समूह, गंगा समूह, यमुना समूह, कृष्णा समूह पांच टीमों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। जिसमें राजभाषा संबंधित, सामान्य ज्ञान तथा रा.ज.वि.अ. से संबंधित प्रश्नों के उत्तर पूछे गए। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री के.पी.गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी एवं श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (रा.भा.) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
गंगा समूह	एन.पी. साहू, उपनिदेशक चमन लाल, एम.टी.एस. के.एस. उपाध्याय, एम.टी.एस. नानक चन्द, अवर श्रेणी लिपिक राकेश कुमार गुप्ता, कार्यपालक अभियंता(मु.) हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता रामकिशन, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
यमुना समूह	के.एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता एस.सी. मंगल, सहायक अभियंता महेश कुमार, एम.टी.एस. राधा, अवर श्रेणी लिपिक आशा ऑबराय, वरिष्ठ निजी सचिव	द्वितीय संयुक्त
कावेरी समूह	आर.के.खरबंदा, उपनिदेशक सत्य प्रकाश तोमर, कनिष्ठ अभियंता सुरेश कुमार तैलंग, अवर श्रेणी लिपिक रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक बिजेन्द्री सैंत्रीवाल, प्रवर श्रेणी लिपिक के.ए. नायुडु, सहायक अभियंता जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार दलीप सिंह, आशुलिपिक	तृतीय संयुक्त
सरस्वती समूह	तृप्ता ढ़ीगरा, प्रधान लिपिक पी.आंजनेयुलु, सहायक अभियंता मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक शोभा रावत, आशुलिपिक विक्रम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक नलिनी मोहन, आशुलिपिक अनुराग, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
कृष्णा समूह	एन. जयंती, प्रधान लिपिक अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियंता रजनी शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक ए.के. जैन, उपनिदेशक इंदु जायसवाल, कनिष्ठ अभियंता के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता अन्जू गुलाटी, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में वर्ष भर चलाई गई 6 प्रोत्साहन योजनाओं के साथ–साथ रा.ज.वि.अ. पदाधिकारियों के बच्चों के लिए आयोजित निबंध प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारर भी हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में मुख्य अभियंता (मुख्यालय) के कर कमलों से प्रतिभागियों ने प्राप्त किए। विवरण

निम्नानुसार है :

1. मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना मुख्यालय में

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	अन्जू गुलाटी, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
2	सत्य प्रकाश तोमर, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
3	मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
4	रजनी शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
5	विक्रम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
6	अजय प्रताप सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
7	डी.के. कर, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
8	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	तृतीय
9	मोहम्मद इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
10	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय

मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना क्षेत्रीय कार्यालयों में

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	राजेन्द्र सिंह नयाल, अवर श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता(उ.) का कार्यालय, लखनऊ	प्रथम
2	मर्सी कोशी, प्रधान लिपिक, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	प्रथम
3	बिजय कुमार बराल, प्रवर श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता(उ.) का कार्यालय, लखनऊ	द्वितीय
4	वी.पी. नेमा, कनिष्ठ अभियंता, अन्वेषण प्रभाग,भोपाल	द्वितीय
5	वलसला कुमारी एस., अ.श्रे.लि, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	द्वितीय
6	एस. बी. सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता(उ.), लखनऊ	तृतीय
7	मीनाक्षी डी.पार, अवर श्रेणी लिपिक, अन्वेषण प्रभाग, वलसाड	तृतीय
8	के.वी.वी.एस.एस.पी.राजू, अवर श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता(द.) का कार्यालय, हैदराबाद	तृतीय
9	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्र.श्रे.लि., अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	तृतीय
10	क्रिष्णा पी. देसाई, प्रवर श्रेणी लिपिक, अन्वेषण सर्किल, वलसाड	तृतीय

2. श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना मुख्यालय से :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	राकेश कुमार खरबंदा, उपनिदेशक	संयुक्त अधिकारी वर्ग
2	राकेश कुमार गुप्ता, कार्यपालक अभियंता (मु.)	
1	निर्मल सिंह, आशुलिपिक	संयुक्त कर्मचारी वर्ग
2	रीना वाधवा, आशुलिपिक	

3. तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता, मुख्यालय, नई दिल्ली	प्रथम संयुक्त
2	मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक	

4. जटिल मामलों पर टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन योजना:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	प्रथम संयुक्त
2	मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक	
3	शशि चंद मंगल, सहायक अभियंता	द्वितीय

5. प्रारूपकारों हेतु प्रोत्साहन योजना :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एम. विजयलक्ष्मी, प्रारूपकार, अन्वेषण प्रभाग, हैदराबाद	प्रथम

6. बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन योजना :

क्र.सं.	बच्चों का नाम एवं कक्षा	माता/पिता का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1	आर्यन स्यानियां, छठी	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता,	मुख्यालय	प्रथम संयुक्त
2	निखिल मौर्य, 9वीं	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	मुख्यालय	
3	परी वार्ष्णेय 8वीं	हरीओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता,	मुख्यालय	
4	लक्षिता कुमारी, 7वीं	राम किशन, कनिष्ठ अभियंता	मुख्यालय	
5	अभिषेक सिंह 10वीं	ओम बाई, एम.टी.एस.	अन्वेषण सर्किल, हैदराबाद	
6	स्वयम रूपराव हेडाऊ, 5वीं	रूपराव हेडाऊ, सहायक अभियंता	अन्वेषण प्रभाग, नागपुर	द्वितीय संयुक्त
7	वंशिका स्यानियां, 5वीं	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता,	मुख्यालय	
8	निलेश मौर्य, 7वीं	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	मुख्यालय	
9	ओजस वार्ष्णेय 11वीं	हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता,	मुख्यालय	
10	शशांक भटेले 11वीं	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियंता	मुख्यालय	
11	निलांशु रूपराव हेडाऊ, 11वीं	रूपराव हेडाऊ, सहायक अभियंता	अन्वेषण प्रभाग, नागपुर	तृतीय संयुक्त
12	वैभव कुमार, 5वीं	राम किशन, कनिष्ठ अभियंता	मुख्यालय	
13	दत्त कुमार कक्कड़, 12वीं	सरोजबाला शर्मा, प्रधान लिपिक	अन्वेषण प्रभाग, वलसाड	
14	के. अक्षिता, 8वीं	ओम बाई, एम.टी.एस.	अन्वेषण सर्किल, हैदराबाद	
15	अदा कश्यप, 8वीं	रीता कश्यप, आशुलिपिक	मुख्यालय	
16	श्रेया, दूसरी	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	मुख्यालय	प्रोत्साहन संयुक्त
17	मयंक भटेले चौथी	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियंता	मुख्यालय	
18	कार्तिक बघेल चौथी	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	मुख्यालय	

वर्ष 2017 – 2018 की ''राजभाषा वैजयंती'' अन्वेषण सर्किल, ग्वालियर को और ''लघु राजभाषा वैजयंती'' उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभाग, ग्वालियर, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल, अन्वेषण प्रभाग, झांसी और अन्वेषण प्रभाग, जयपुर को प्राप्त हुई।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यशालाएं

दिनांक 19 सितम्बर, 2018 को मुख्यालय के समिति कक्ष में ''राजभाषा नीति का अनुपालन'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा), रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली ने दिया। व्याख्यान के बाद अभ्यास करवाया गया तथा अन्त में परीक्षा ली गई। निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	योगश मलिक, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3	नरेन्द्र कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय

दिनांक 24 सितम्बर, 2018 को मुख्यालय के समिति कक्ष में ''टिप्पण एवं प्रारूपण'' विषय पर अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान डॉ. संजय कुमार, उपनिदेशक (प्रशासन), प्रसार भारती, नई दिल्ली ने दिया। व्याख्यान के बाद अभ्यास करवाया गया तथा अन्त में परीक्षा ली गई। निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
2	इंदु जायसवाल, कनिष्ठ अभियंता, एस.दुर्गाबाई, प्रवर श्रेणी लिपिक अनुराग, आशुलिपिक, आर बालकृष्णन, सहायक अभियंता, मोहम्मद इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3	योगेश मलिक, अवर श्रेणी लिपिक, मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक, राधा, अवर श्रेणी लिपिक, संजीव कुमार राणा, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय

दिनांक 28.09.2018 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सभी विजेता प्रतिभागियों को उपरोक्तानुसार पुरस्कार प्रदान किए। इसके साथ–साथ माननीय राष्ट्रपति महोदय के आदेशों के अनुपालन में आरम्भ की गई ''साहित्यिक योगदान हेतु कर्मियों को विशेष पुरस्कार योजना'' के पुरस्कार मुख्य अभियंता महोदय ने निम्नानुसार प्रदान किए :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	श्री जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार, मुख्यालय	प्रथम
2	श्री के.एस. नायुडु, सहायक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, हैदराबाद	द्वितीय

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने मुख्य अभियंता (मुख्यालय) महोदय को धन्यवाद दिया जिन्होंने सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया तथा अपने संदेश से सभी को गौरवान्वित किया। उन्होंने निदेशक (तकनीकी) एवं अपने राजभाषा अधिकारी का भी आभार माना जिन्होंने अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद पखवाड़े की सुचारू व्यवस्था हेतु समय–समय पर मार्गदर्शन दिया। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सभी निर्णायकों : श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्या.), श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, श्रीमती जानसी विजयन निदेशक (एम.डी.यू.), श्री रूपेश कुमार सिन्हा , निदेशक (वित्त), श्री नरेन्द्र कुमार, निदेशक (प्रशा.), श्री अफरोज आलम, अधीक्षक अभियंता एवं श्री मुजफ्फर अहमद, अधीक्षक अभियंता का भी आभार माना जिन्होंने समय से निर्णय करके प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक समापन किया और प्रतियोगिताओं की निर्णय प्रक्रिया पारदर्शी और रोचक बनाने में अपना योगदान दिया। पखवाड़े में कार्यशाला लेने के लिए डॉ. संजय कुमार, उपनिदेशक (प्रशासन) प्रसार भारती का भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने अत्यधिक रोचक ढ़ंग से जटिल विषय को सरल बनाकर सभी को समझाया। उन्होंने कार्यपालक अभियंता (मुख्यालय) श्री आर.के. गुप्ता और विशेषकर श्री के.एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता का धन्यवाद किया जिन्होंने पखवाड़े में जलपान की व्यवस्था सुचारू ढंग से सम्पन्न की। उन्होंने लेखा अनुभाग के अपने सभी साथियों का भी आभार माना जो आगे सभी को पुरस्कार प्रदान करेंगे। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अपने सहयोगियों उर्मिला रानी, अनिल कुमार द्विवेदी, रेनू और कृष्ण स्वरूप उपाध्याय का भी धन्यवाद किया। अंत में सभी का आभार व्यक्त किया जिनकी भागीदारी और सहयोग के बिना यह पखवाड़ा इतनी भली–भांति सम्पन्न ही नहीं हो पाता। इसी के साथ पखवाड़े का समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2018 का आयोजन

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

प्रश्नमंच (मौखिक) प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
समूह 'अ'	पी. श्रीनिवासुलु, सोहन कुमार एवं दल बहादुर	प्रथम संयुक्त
समूह 'ब'	राजीव कनौजिया, अर्जुन सिंह बिष्ट एवं कैलाश चन्द्र सामल	द्वितीय संयुक्त
समूह 'स'	राहुल सक्सेना, राजेन्द्र सिंह नयाल, चन्द्र बहादुर थापा एवं हरिहर दास	तृतीय संयुक्त
समूह 'द'	शिवा कान्त पाण्डेय, रंजन कुमार साहू, बिजय कुमार बराल एवं जय प्रकाश	प्रोत्साहन संयुक्त
समूह 'य'	सुभाष चन्द्र चौधरी, अहीश कुमार, एस. बी. सिंह एवं एस.के. दास	प्रोत्साहन संयुक्त

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	राजीव कनौजिया, अहीश कुमार, राजेन्द्र सिंह नयाल, एवं चन्द्र बहादुर थापा	प्रथम संयुक्त
2	शिवा कान्त पाण्डेय, एस.बी. सिंह, शरत कुमार दास एवं जय प्रकाश	द्वितीय संयुक्त
3	अर्जुन सिंह बिष्ट, सुभाष चन्द्र चौधरी, राहुल सक्सेना एव रंजन कुमार साहू	तृतीय संयुक्त
4	सोहन कुमार एवं दल बहादुर	प्रोत्साहन संयुक्त
5	बिजय कुमार बराल एवं कैलाश चन्द्र सामल	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

नारा लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	संजय त्रिपाठी एवं राजीव निगम	प्रथम संयुक्त
2	प्रमोद कुमार एवं आलोक कुमार सिंह	द्वितीय संयुक्त
3	बिबियाना सांगा एवं सौभाग्य कुमार बल	तृतीय संयुक्त
4	अशोक कुमार शुक्ला एवं बिपिन कुमार	प्रोत्साहन संयुक्त
5	सुभाष चन्द्र साहू	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	जयराम एवं एस.के.बल	प्रथम संयुक्त
2	संजय त्रिपाठी एवं सुभाष चन्द्र साहू	द्वितीय संयुक्त
3	बिबियाना सांगा एवं ए.के. सिंह	तृतीय संयुक्त
4	प्रमोद कुमार एवं राजीव निगम	प्रोत्साहन संयुक्त
5	ए.के. शुक्ला, बिपिन कुमार एवं दीनदयाल प्रसाद	प्रोत्साहन संयुक्त

मुख्य अभियंता (उत्तर) कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैः

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

श्रुतलेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	दीपक नाफड़े एवं प्रवीण दीक्षित	प्रथम संयुक्त
2	डी.के. गोयल एवं विनीता शर्मा	द्वितीय संयुक्त
3	संजय कुमार, पी.एन.सोनी एवं रविन्द्र सेठी	तृतीय संयुक्त
4	गीता बाथम एवं डालचंद	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

श्रुतलेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	रमाकान्त मिश्रा एवं राकेश कुमार	प्रथम संयुक्त
2	पुष्प कुमार शर्मा एवं सुरेश बाबू मिश्रा	द्वितीय संयुक्त
3	रंजना घोटणकर एवं सुभाष सक्सेना	तृतीय संयुक्त
4	नवीन सक्सेना	प्रोत्साहन
5	प्रिया बिज एवं बलवंत सिंह	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	डी.के. गोयल, एस.के. सिंघल, विनीता शर्मा, दीपक नाफड़े, पी.एन.सोनी, रविन्द्र सेठी, गीता बाथम, प्रवीण दीक्षित, एवं डालचंद	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	पी.के. शर्मा, सुरेश बाबू मिश्रा, रमाकान्त मिश्रा, रंजना घोटणकर, नवीन सक्सेना, सुभाष सक्सेना, राकेश कुमार, प्रिया बिज, वीरेन्द्र कुमार मिश्रा, अशोक कुमार गोडिया एवं बलवंत सिंह	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, ग्वालियर

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना एवं अन्वेषण उप प्रभाग रांची :

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना एवं अन्वेषण प्रभाग, रांची में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	प्रतियोगिता का नाम			
		शब्दार्थ	निबन्ध लेखन	त्वरित भाषण	श्रुतलेखन
1	मोहन कुमार	–	–	तृतीय	–
2	बी.के. सिंह	द्वितीय	द्वितीय	प्रथम	प्रथम
3	पी.के. राय	प्रथम	प्रथम	द्वितीय	द्वितीय
4	हिमांशु टुडू	प्रोत्साहन	–	–	प्रोत्साहन
5	बी.के. पात्रा	प्रोत्साहन	–	–	तृतीय
6	निरंजन स्वाईं	–	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन	–
7	एस.एस. सिंह	–	–	–	प्रोत्साहन
8	करण कुमार	तृतीय	प्रोत्साहन	–	–
9	अरविंद कुमार शर्मा	–	तृतीय	–	–
10	प्रशान्त कुमार दास	–	–	प्रोत्साहन	–

अन्वेषण उप प्रभाग रांची :

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	प्रतियोगिता का नाम	
		प्रश्नमंच	शब्दावली एवं निबन्ध
1	लक्ष्मण टुडू	प्रथम	द्वितीय
2	ए.के. महान्ती	द्वितीय	प्रथम
3	जी.सी. तराई	तृतीय	–
4	आर.सी. बेहुरा	प्रोत्साहन	तृतीय
5	एस.के. चम्पती	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

त्वरित भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	आर.के. बिजोरिया	प्रथम
2	जी.एस. सोनी	द्वितीय
3	बी.डी. शर्मा	तृतीय
4	राजेश कुमार एवं सुरेश चन्द्र	प्रोत्साहन
5	डी.सी.साहू	प्रोत्साहन

प्रश्नोतरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	आर.के. बिजोरिया, जी.एस. सोनी, बी.डी. शर्मा, घनेश्वर मलिक, डी.सी.साहू एवं राजेश कुमार	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।

अन्वेषण सर्किल, अन्वेषण प्रभाग, पटना

अन्वेषण प्रभाग, झांसी

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भोपाल

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भोपाल में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्‌घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैः

शुद्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	पी.के. राठौर एवं स्नेहा अ. विश्वरूप	प्रथम संयुक्त
2	वी.पी. नेमा एवं रंजना शुक्ला	द्वितीय संयुक्त
3	आर.के. पटेल एवं दीपक शर्मा	तृतीय संयुक्त
4	साली अरूण गंगाधर एवं मर्सी कोशी	प्रोत्साहन संयुक्त
5	वलसला कुमारी	प्रोत्साहन

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	स्नेहा अ. विश्वरूप, वलसला कुमारी एवं यू.के. बरूआ	प्रथम संयुक्त
2	पी.के. राठौर एवं मर्सी कोशी	द्वितीय संयुक्त
3	वी.पी. नेमा, रंजना शुक्ला एवं के.एन. साहू	तृतीय संयुक्त
4	आर.के. पटेल, बद्री प्रसाद एवं दीपक शर्मा	प्रोत्साहन संयुक्त
5	एच.के. पाण्डेय, साली अरूण गंगाधर एवं नीरज	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ.,कोलकाता

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्‌घाटन समारोह एवं हिन्दी

दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

हिन्दी "आलेखन, टिप्पण एवं शब्दावली" प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस.सी.पारूई एवं एस.बी.धीरसामन्त	प्रथम संयुक्त
2	ए.आर.दास एवं बी.एल.नायक	द्वितीय संयुक्त
3	पी.के.राउतराय, जी.पी. बेहुरिआ एवं अखिल दास	तृतीय संयुक्त
4	डी सेट्टी किरण कुमार एवं पी.के.सामल	प्रोत्साहन संयुक्त

हिन्दी पर्यावरण संतुलन अथवा नदियों के जल में बढ़ता प्रदूषण के सम्बन्ध में प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम(सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस.सी. पारूई एवं अखिल दास	प्रथम संयुक्त
2	जे. देवसुन्दर एवं ए.के. मिश्र	द्वितीय संयुक्त
3	ए.आर. दास एवं एस.बी. धीरसामन्त, पी.के. सामल	तृतीय संयुक्त
4	ए.एच.चौधरी एवं जे.बी.सेठी	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, भोपाल

अन्वेषण प्रभाग, कोलकाता

मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2018 का आयोजन

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

प्रश्न मंच/टिप्पणी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	सी. श्रीलता	प्रथम
2	एम. श्रीनिवास	द्वितीय
3	के.एस. नायुडु	तृतीय
4	पी.सी.एम.राव	प्रोत्साहन
5	के.वी.वी.एस.पी. राजु	प्रोत्साहन

लघु टिप्पणी एवं मसौदा प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एम. श्रीनिवास	प्रथम
2	के.एस. नायुडु	द्वितीय
3	के.वी.वी.एस.पी. राजु	तृतीय
4	सी. श्रीलता	प्रोत्साहन
5	पी.सी.एम.राव	प्रोत्साहन

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एम. श्रीनिवास	प्रथम
2	पी.सी.एम.राव	द्वितीय
3	सी. श्रीलता	तृतीय
4	बी.के.एस. ठाकुर	प्रोत्साहन

मुख्य अभियंता (दक्षिण) कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

मुख्य अभियंता (दक्षिण) कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण प्रभाग–I, रा.ज.वि.अ., नासिक :

अन्वेषण प्रभाग–I, रा.ज.वि.अ., नासिक में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

श्रुतलेख, शब्दार्थ एवं हिन्दी व्याकरण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	श्रीमती एस. व्ही. अयाचित, एवं श्री ए. एन. महेता,	प्रथम संयुक्त
2	श्री व्ही. एम. भोंसले	द्वितीय
3	श्री एम.व्ही.एस.यू. पवन रामनुजम	तृतीय
4	श्री एस. के. यल्लूर, एवं श्रीमती एस. एस. रणदिवे	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग–II, रा.ज.वि.अ., नासिक :

अन्वेषण प्रभाग–II, रा.ज.वि.अ., नासिक में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	चेतन शर्मा	प्रथम
2	पी.ए. मालगे	द्वितीय
3	डी.राम मोहना राव	तृतीय
4	एन.जे. सरोदे	प्रोत्साहन
5	एस. गुरूराजन	प्रोत्साहन

राजभाषा ज्ञान, शब्द जोड़ प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस. गुरूराजन	प्रथम
2	एम.के. उद्गट्टी	द्वितीय
3	एन.जे. सरोदे	तृतीय
4	आर.के. झाडे	प्रोत्साहन
5	डी. राममोहना राव	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में

कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

हिन्दी भाषा ज्ञान (सामूहिक) राजभाषा, शब्दावली, शुद्धलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	रूपराव आर हेडाऊ एवं टी.बी.बुर्डे	प्रथम संयुक्त
2	एस.के. गावन्डे एवं वी.बी. टेटे	द्वितीय संयुक्त
3	एम. विजयलक्ष्मी एवं डी.रामान्जनेयुलू	तृतीय संयुक्त
4	एस. सुरेश एवं ए.के. राव	प्रोत्साहन संयुक्त
5	एस.राजा एवं एस. रहीम	प्रोत्साहन संयुक्त

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस. सुरेश एवं एस. रहीम	प्रथम संयुक्त
2	एस.के.गावन्डे, वी.बी. टेटे	द्वितीय संयुक्त
3	डी.रामान्जनेयुलू एवं देवानंद मइके	तृतीय संयुक्त
4	एस. राजा एवं ए.के. राव	प्रोत्साहन संयुक्त
5	रूपराव आर हेडाऊ एवं टी.बी.बुर्डे	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग–I/II, नासिक

अन्वेषण प्रभाग, नागपुर

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	प्रतियोगिता का नाम	
		प्रश्नोत्तर	अनुवाद
1	शरनप्पाग.बी. मुण्डरगी, भारती श्रीराम, ए.आर.रेखा सिंह, एच.जयरामय्या एवं गीता एस.के.	प्रथम संयुक्त	–
2	डी. जीवमालिनी, संध्या कुलकर्णी, एन. पापन्ना, एच.यू. प्रभाकर एवं वी. रामी रेड्डी	द्वितीय संयुक्त	–
3	एम.पी. कृष्णमूर्ति, शिवन्नाक, एस.राजलक्ष्मी, एस.नारायण एवं बी.एन. इन्द्राणी	तृतीय संयुक्त	–
4	पी. चेन्नय्या, ए. बालकृष्णन, जी.राजन्ना एवं एम.चिन्नेप्पा	प्रोत्साहन संयुक्त	–

5	एस.बी.मुंडरगी, पी. चेन्नय्या, डी. जीवमालिनी, गीता एस.के. एवं एम. चिन्नाप्पी	–	प्रथम संयुक्त
6	शिवन्ना, ए.आर.रेखा सिंह, एच.जयरामय्या, जी. राजन्ना एवं वी.रामी रेड्डी	–	द्वितीय संयुक्त
7	एम.पी. कृष्णमूर्ति, एस.नारायण मूर्ति, संध्या कुलकर्णी एवं भारती श्रीराम,	–	तृतीय संयुक्त
8	एन. पापन्ना, बी.एन. इन्द्रामणी एवं एच. यू. प्रभाकर	–	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस. जेम्स, ई. केम्पन्ना, सी.सुब्रमणी एवं सी.एन. मुरली	प्रथम संयुक्त
2	आर. चन्द्रशेखरन, टी. महेन्द्रन, पी. पद्मजा एवं एस. शेखरन	द्वितीय संयुक्त
3	एस.मोहम्मद इस्माइल सित्तिक , गोमती, बी.मनवालण एवं वी. सुकुमारण	तृतीय संयुक्त
4	वी.एस.ए. मुहम्मद अयूब एवं के. वल्सलराजन	प्रोत्साहन संयुक्त
5	आर. पाण्डुरंगन एवं आर. एलुमलई	प्रोत्साहन संयुक्त

हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	आर. चन्द्रशेकर, गोमती, सी. सुब्रमणी एवं एस. शेखरन	प्रथम संयुक्त
2	एस.मोहम्मद इस्माइल सित्तिक, वी. एस.ए. मुहम्मद अयूब, बी.मनवालण एवं के.वल्सगराजन	द्वितीय संयुक्त
3	एस. जेम्स, ई. केम्पन्ना, आर. एलुमलई एवं वी सुकुमारण	तृतीय संयुक्त
4	टी. महेन्द्र एवं आर. पाण्डुरंगन	प्रोत्साहन संयुक्त
5	पी.पद्मजा एवं सी.एन.मुरली	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान दोनों कार्यालयों में अलग–अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

अन्वेषण सर्किल

हिन्दी अंताक्षरी एवं कविता प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	कल्पना ए. परमार एवं विनोद डी. पटेल	प्रथम संयुक्त
2	एस.एम. मिस्त्री, जे.डी.पटेल एवं भावना पी.जोशी	द्वितीय संयुक्त
3	के.आर.पटेल, क्रिष्णा, पी.देसाई एवं रीटा ए.नायक	तृतीय संयुक्त
4	के.के. धोकिया एवं अशोक सी.पटेल	प्रोत्साहन संयुक्ति

अन्वेषण प्रभाग

हिन्दी अंताक्षरी एवं कविता प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	रमेश सी. कमतगी एवं एम.डी. ढीमर	प्रथम संयुक्त
2	जे.बी.जानी एवं एन.सी.आशरा	द्वितीय संयुक्त
3	सरोजबाला शर्मा एवं मीनाक्षी डी.पार	तृतीय संयुक्त
4	आई.एस. जाप्ताव	प्रोत्साहन
5	के.के. सुधामनी	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

प्रश्नमंच में अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., वलसाड एवं अन्वेषण प्रभाग, वलसाड को अलग–अलग रूप से प्रतियोगियों से प्रश्न पूछे गये एवं ज्यादातर प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

अन्वेषण प्रभाग, बेंगलूरू

अन्वेषण प्रभाग, चेन्नई

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ.,वडोदरा

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वडोदरा में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	डी.बी.ओझा एवं डी.बी.शाह	प्रथम संयुक्त
2	जे.डी.पांडे एवं एन.के.जादवानी	द्वितीय संयुक्त
3	वाय.जे.व्यास एवं सी.जेड.पटेल	तृतीय संयुक्त
4	ए.पी.बास्कीं एवं डी.बी.बारोट	प्रोत्साहन संयुक्त

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	जे.डी.पांडे, डी.बी.ओझा, ए.पी. बास्की, डी.बी.शाह, एन.के. जादवानी, वाय.जे.व्यास, सी.जेड.पटेल एवं डी.बी.बारोट	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।

अन्वेषण प्रभाग, वडोदरा

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, वलसाड

अन्वेषण सर्किल, अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर तथा उप–प्रभाग, रा.ज.वि.अ., राजामुन्द्री,

अन्वेषण सर्किल, अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर तथा उप–प्रभाग, राजामुन्द्री, रा.ज.वि.अ., में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितम्बर, 2018 को उद्घाटन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एन. पाठक, बी. रविचंद्र. यू. के.मिश्रा एवं यू.के.रथ	प्रथम संयुक्त
2	कुमारी एस.सेनापति, एम.एम.धल, एम.एन.राव, बी.सी.पात्र, ए.पी.पात्र एवं के.पी.राव	द्वितीय संयुक्त
3	कुमारी बी.एल.देई, सिमन्तिका मोहान्त, संध्या रानी महापात्र, बी. मोहान्ती, रंजन कुमार मलिक एवं बी.एम.नायक	तृतीय संयुक्त
4	ए.के.पाढी, जे.महालिक एवं के.के. मोहान्ती	प्रोत्साहन संयुक्त
5	आर.एन.पण्डा, बी.सी.बारिक एवं एस.एन.गौड	प्रोत्साहन संयुक्त

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एन.पाठक, यू.के.रथ, एम.एम.धल एवं एम.कोदण्ड राम	प्रथम संयुक्त
2	के.आदिविष्णु, बी.रविचंद्र, ए.पी.पात्र एवं के.पी.राव	द्वितीय संयुक्त
3	बी.एम. नायक, बी.सी.पात्र, एम.एन. राव, रंजन कुमार मलिक, बी.मोहान्ती, श्रीमन्तिका मोहान्त एवं यू.के.मिश्रा	तृतीय संयुक्त
4	ए.के.पाढी, संध्या रानी महापात्र, बी.सी. बारिक एवं आर.एन.पण्डा	प्रोत्साहन संयुक्त
5	जे. महालिक, के.के.मोहान्ती बी.एल.देई, एस.एन.गौड एवं एस. सेनापति	प्रोत्साहन संयुक्त

राजामुंद्री में हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	के.रालिंगेश्वर राव	प्रथम
2	डी.जे.प्रशुना	द्वितीय
3	बी.सुब्रमन्यम	तृतीय
4	सी.एच. राजपाल	प्रोत्साहन
5	बी. कोटिया	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर

विनती, सलाह और चेतावनी – वहशी दरिंदों को

*जगवंत खेड़ा

हर दिन असमत लूटी जाती, कहां हो तुम अल्ला जी।
न घर न बाहर और न कोई सेफ है मोहल्ला जी।
हर..।

1. दिन में भी बाहर निकलने से डरती हैं लड़कियां।
मजबूरी में दिन–रात काम करती हैं लड़कियां।
हवस का खामियाज़ा क्यों भरती हैं लड़कियां।
कहती नहीं अन्दर ही अन्दर खरती[1] हैं लड़कियां।
तीरों सी नुकीली बातों को जरती[2] हैं लड़कियां।
पंखों से लटक कर अक्सर मरती हैं लड़कियां।
या फिर जिन्दा रह कर, सब हरती हैं लड़कियां।
बेशक हर क्षेत्र में वो, मार रहीं हैं मल्ला[3] जी,
हर..।

2. हर उम्र हर वेश में जहां, दरिंदे मिल सकते हैं।
नंगी अबलाओं को नोचते, परिंदे मिल सकते हैं।
लाशों की तरह गुमसुम मापे जिन्दे[4] मिल सकते हैं।
लड़कियां पैदा करने वाले, शरमिन्दे मिल सकते हैं।
मेहनतकश गरीब या फिर, कारिन्दे मिल सकते हैं।
सारी उम्र बदअसीसां उनको दिन्दे[5] मिल सकते हैं।
या फिर यादों की दुनिया के बशिन्दे[6] मिल सकते हैं।
जनता तो भूल जाती है थोड़ा करके हो–हल्ला जी,
हर..।

3. लड़कों से भी तो पूछो कभी, कहां वो आते–जाते हैं।
कैसे–कैसे दोस्तों के संग, अपना वक्त बिताते हैं।
नशा तो नहीं करते कहीं, पीते या फिर पिलाते हैं।
सड़कों पे बाइकें और कारें, तेज़ तो नहीं चलाते हैं।
कॉलेज की प्रयोगशाला से, तेजाब तो नहीं चुराते हैं।
किसी की लाडली पे जबरी[7], हक तो नहीं जमाते हैं।
मां–बाप भी नहीं छुड़ा सकते, आसानी से पल्ला जी,
हर..।

---

*प्रारूपकार

4. हिम्मत तो देखो जरा इन बिगड़े हुए अमीरजादों की।
भनक तो लगती ही होगी, इनके गंदे इरादों की।
मिट्टी पलीत कर रखी है, विचारे सीधे साधों की।
धज्जियां उड़ा देते हैं खुद से, करे हुऐ वादों की।
कद्र कभी ना करते ये, किये हुए तमाम तगादों[8] की।
शिक्षा दी हुई भूल गए हैं, अपने बाप और दादों की।
जेल में ही कटती जिन्दगी, आधों से ज्यादों की।
पूछते क्यों नही मम्मी डैडी, रात को कहां चला जी,
हर..।

5. क्या हो गया है आजकल मेरे देश के जवानों को
बंद ही करना होगा अब नशे की सब दुकानों को।
ताकि मिले ना खाने को बिगड़े हुए शैतानों को।
इज्जत रोजगार देना होगा सभी हुए परेशानों को।
सरवीलैंस पर रखना होगा सब करीबी मेहमानों को।
कुछ सख्त सोचना ही होगा अब सियासतदानों को।
बरकरार रखना ही होगा भारत मां की शानों को।
बहुत हो गए वादे और बहुत हो गई गल्लां[9] जी,
हर..।

6. कमजोर कानून दरिन्दों का कुछ भी नहीं बिगाड़ता।
सालों साल गुजर जाते हैं सूली पे नहीं चढ़ता।
घर बसाता बहुत कम, बहुत ज्यादा है उजाड़ता।
बिगड़ा हुआ अमीरजादा हर आती जाती को ताड़ता।
सरे आम दुपट्टा खींचे, बेबाक है दहाड़ता।
सिस्टम को चैलेंज करे, पैरों तले लताड़ता।
तार–तार करता सब बाकी बचा हुआ है साड़ता[10]।
मिट नही सकती कभी दिल पे लगीयां सल्ला जी,
हर..।

7. या तो गंदे खून को मां–बाप खुद ही फील करें।
या बाद में केस लडने को, कोई भी ना वकील करें।
पहली ही छेड़–छाड़ पर, दिल भर के जलील करें।
बैंक खाते फालतू जेब खर्चे, हर सुविधा को सील करें।
ममता के दरिया को, समुन्द्र या फिर झील करें।
या खुद ही अपने हाथों से, अपना रावण लील करें।
या फिर शांत करके रखें जवानी वालिंया छल्ला[11] जी,
हर..।

8 पंडित जी पकड़े जा रहे, अब फादर पकड़े जा रहे।
हथकड़ियों और जंजीरों में धर्म गुरू जकड़े जा रहे।
गलती मानने की बजाए हैं आगे अकड़े जा रहे।
समाज को डसने वाले वो बनते मकड़े जा रहे।
नंगे पैरों में चुभने वाले वो बनते भखड़े[12] जा रहे।
गुडों और नेता पाल कर वो और हो तगड़े जा रहे।
कानून को जेब में डाल के और भी हकड़े जा रहे।
रावण जैसे आफरे[13] घूमे क्या शर्मा क्या भल्ला–जी,
हर... ।

9 औरत जहां सुरक्षित नहीं वो देश एक दिन मिट जायेगा।
जग जननी की बददुआओं को कोई भी झेल ना पायेगा।
तार तार हुई इज्जतों के साथ खुशियां कौन मनाएगा।
कमजोर कानून एक ऐसा भी दिन दिखलाएगा।
भ्रूण हत्या में देख लेना एक दिन लड़का भी मारा जायेगा।
ज़हरीले सांपों को भला कौन अपना दूध पिलायेगा।
शर्मसार हो कर ''जगवंत'' क्यों नहीं तिलमिलायेगा।
मानसिक बीमारों को अब समाज से करो इकल्ला जी,
हर... ।

खरती[1]	–	अन्दर ही अन्दर खुद को खत्म करना
जरती[2]	–	बर्दाश्त करना
मल्ला[3]	–	उपलब्धियां
जिन्दे[4]	–	बिना किसी उद्देश्य के जीना
दिन्दे[5]	–	देते
बशिन्दे[6]	–	नागरिक
जबरी[7]	–	जबरदस्ती
तगादों[8]	–	आशाओं
गल्ला[9]	–	बातें
साड़ता[10]	–	जलाता, सबूत मिटाना
छल्ला[11]	–	लहरें
भखड़े[12]	–	एक किस्म का कांटा
आफरे[13]	–	अहंकारी

पर्यावरण

*अर्चना गुप्त

जीव जंतु पर्वत और निर्झर, सरिता सागर वन उपवन।
पादप, पल्लव, वृक्ष, सुमन, रहे प्रकृति के जीवन धन।।
जलवायु, अद्भुत हरियाली, धरती का पावन श्रृंगार।
यह ईश्वर की अनुपम देन, मानवता को शुभ उपहार।।
पर इन सब को प्रदूषित और समाप्त करते जा रहे हैं हम।
रूको, सोचो ये किस राह पर बढ़े जा रहे हैं हम।।
पीने को पानी, खाने को अन्न, श्वास हेतु वायु।
जीवन के आधार को ही खोते जा रहे हैं हम।।
पर्यावरण को भूलकर, कृत्रिमता अपना रहे हैं हम।
ए.सी., एअर फ्रैशनर के सहारे सांस लेना चाह रहे हैं हम।।
पेड़ों के नीचे, नदी के किनारे, सागर तटों को भुला रहे हैं हम।
जीवन के आधार को ही खोते जा रहे हैं हम।।
रखें सफाई, करें संरक्षण, पर्यावरण स्वच्छ और शुद्ध।
सृष्टि की भेंट पानी, अन्न, पेड़, पौधों के न हों विरूद्ध।।
मानवता की रक्षा हेतु गलत आदतें छोडें, बनें प्रबुद्ध।
प्रकृति की रक्षा मान कर्तव्य हेतु सभी रहों सन्नद्ध।।

*सहायक निदेशक (राजभाषा)

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद का निरीक्षण

दिनांक 05.09.2018 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद का निरीक्षण किया गया। बैठक की अध्यक्षता समिति के संयोजक श्री प्रसन्न कुमार पाटसाणी ने की। सर्वप्रथम कार्रवाई का शुभारंभ करते हुए श्री प्रसन्न कुमार पाटसाणी ने संसदीय राजभाषा समिति की महत्ता का वर्णन किया। मुख्य अभियंता (मुख्यालय/दक्षिण), श्री आर.के.जैन ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अभियंता (मुख्यालय/दक्षिण), श्री आर.के.जैन तथा श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तक.) एवं राजभाषा अधिकारी ने पुष्प गुच्छों से समिति के संयोजक, श्री प्रसन्न कुमार पाटसाणी, सांसद तथा माननीय सदस्य, श्री सुनील बलीराम गायकवाड़, सांसद तथा संसदीय समिति के पदाधिकारियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् मुख्य अभियंता (मुख्यालय/दक्षिण), श्री आर.के.जैन ने अपने साथियों का परिचय समिति से करवाया। उन्होंने तत्पश्चात् हैदराबाद कार्यालय के कार्यकलापों के बारे में श्री एन.जी.राव, अधीक्षक अभियंता (प्रभारी) से चर्चा आरम्भ करने का अनुरोध किया। समिति ने प्रश्नावली पर गहन चर्चा की। समिति के सदस्यों ने रा.ज.वि.अ. के हिन्दी संबंधी कार्यों की प्रगति की सराहना की एवं कहा कि वे यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हैं कि रा.ज.वि.अ., हैदराबाद हिन्दी संबंधी नियमों तथा निदेशों का पूरा अनुपालन कर रहा है। समिति ने ''ग'' क्षेत्र में तकनीकी संगोष्ठी करवाने के लिए रा.ज.वि.अ. की प्रशंसा की। समिति के सदस्य श्री गायकवाड़ ने धीरे–धीरे हिन्दी में काम करने के लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करने के लिए कहा। अंत में आदरणीय श्री पाटसाणी जी ने ध्यान देने योग्य बातें एवं समिति का प्रतिवेदन श्री एन.जी.राव, अधीक्षक अभियंता (प्रभारी) को सौंप कर निरीक्षण बैठक का समापन किया।

दिनांक 05.09.2018 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद का निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा
हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दृष्टि से निरीक्षण
05-06 सितम्बर, 2018, हैदराबाद
IIMR

दिनांक 05.09.2018 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद का निरीक्षण

क्षेत्रीय कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण एवं बैठकें

1. दिनांक 08.08.2018 से 10.08.2018 तक मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल, अन्वेषण प्रभाग, हैदराबाद कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। इस निरीक्षण में तीनों कार्यालयों में राजभाषा की प्रगति की समीक्षा की गई तथा राजभाषा संबंधी कार्यों में गति लाने के उपायों पर श्री एन.जी.राव, अधीक्षक अभियंता (प्रभारी) के साथ गहन चर्चा की गई।

2. दिनांक 24.08.2018 को अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, एवं कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा किया गया। इस निरीक्षण में कार्यालयों में राजभाषा की प्रगति की समीक्षा की गई तथा राजभाषा संबंधी कार्यों में गति लाने के उपायों पर गहन चर्चा की गई।

राजभाषा संबंधी प्रमुख बैठकें

1. दिनांक 20.09.2018 को महानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई। पिछली बैठक के निर्णयों की अनुवर्ती कार्रवाई और पत्राचार की स्थिति पर विचार किया गया। इस बैठक के विचारणीय विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं उन पर निर्णय लिए गए।

2. दिनांक 26.09.2018 को जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। पिछली बैठक के निर्णयों की अनुवर्ती कार्रवाई और पत्राचार की स्थिति पर विचार किया गया। इस बैठक के विचारणीय विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं उन पर निर्णय लिए गए।

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह की झलकियां

"जल ही जीवन है, इसका संरक्षण करें"

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह की झलकियां

''जल ही जीवन है, इसका संरक्षण करें''

हिन्दी पखवाड़े की झलकियां
उद्घाटन समारोह की प्रेस कटिंग

हिंदी पखवाड़ा में सुनाई कविताएं

जागरण संवाददाता, दक्षिणी दिल्ली : साकेत स्थित राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (एनडब्ल्यूडीए) में राजभाषा हिंदी पखवाड़ा के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें राजभाषा विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने विभाग में हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने व हिंदी में अच्छा काम करने वालों को प्रोत्साहित करने जैसे विषयों पर चर्चा की। कार्यक्रम में स्वरचित कविताएं, कहानियां व अन्य रचनाएं प्रस्तुत की गईं।

विभाग हिंदी दिवस यानि 14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाता है। एनडब्ल्यूडीए के महानिदेशक एमके श्रीनिवास और तकनीकी निदेशक एवं राजभाषा अधिकारी केपी गुप्ता ने द्वीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते महानिदेशक एमके श्रीनिवास, साथ में सहायक राजभाषा अर्चना गुप्त, मुख्य अभियंता आरके जैन, राजभाषा अधिकारी केपी गुप्ता ● जागरण

महानिदेशक एमके श्रीनिवास ने विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों को राष्ट्रभाषा हिंदी में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। वहीं तकनीकी निदेशक एवं राजभाषा अधिकारी केपी गुप्ता ने बताया कि इस विभाग में 96 प्रतिशत पत्राचार हिंदी में किया जाता है। सहायक निदेशक (राजभाषा) अर्चना गुप्त और मुख्य अभियंता आरके जैन ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान इंजीनियरों व कर्मचारियों ने महिला सुरक्षा, शिक्षा व विभिन्न सामाजिक विषयों पर स्वरचित कविताएं सुनाई। सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर में अन्य लोग मौजूद रहे।

हिन्दी पखवाड़े की झलकियां
समापन समारोह की प्रेस कटिंग

हिंदी में कामकाज करने वालों को किया सम्मानित

कर्मचारी को प्रमाणपत्र देते मुख्य अभियंता आरके जैन ● जागरण

जागरण संवाददाता, दक्षिणी दिल्ली : साकेत के राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (एनडब्ल्यूडीए) में शुक्रवार को राजभाषा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। इसमें हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग की ओर से हिंदी दिवस यानी 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा के तहत कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य अभियंता आरके जैन ने की, वहीं तकनीकी निदेशक एवं राजभाषा अधिकारी केपी गुप्ता ने प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों व अधिकारियों को पुरस्कृत किया। केपी गुप्ता ने कहा कि इन पुरस्कारों से इनका उत्साहवर्धन होगा। अधिकारियों व कर्मचारियों को राष्ट्रभाषा हिंदी में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक (राजभाषा) अर्चना गुप्त ने किया। उन्होंने बताया कि इंजीनियरों व अन्य अधिकारियों ने अपनी रचनाओं से साबित कर दिया कि वे मातृभाषा को भी बढ़ावा दे रहे हैं। ड्राफ्टमैन जगवंत खेड़ा को उनकी जल पर स्वरचित कविता के लिए पुरस्कृत किया गया।

हिंदी हैं हम

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए। जनता की बात जनता की भाषा में होनी चाहिए।
- महात्मा गांधी

हिंदी एक जानदार भाषा है। वह जितनी बढ़ेगी, देश का उतना ही नाम होगा।
-जवाहर लाल नेहरू

दैनिक जागरण
नई दिल्ली, 14 सितंबर 2018
www.jagran.com

जन-जन की भाषा है हिंदी

अंग्रेजी ने हड़प लिया स्थान

अधिनियम में बदलाव की जरूरत

बनाएं रोजगार का साधन

हस्ताक्षर से करें शुरुआत

संस्कृति की हो रही उपेक्षा

शासकीय कार्यों में बढ़े व्यवहार

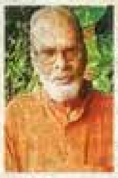

पहले संवैधानिक दर्जा दिलाएं

बोलने की स्वतंत्रता दी जाए

कार्यालयों की भाषा बनाई जाए

पाठकों की प्रतिक्रिया

वाप्कोस लिमिटेड

WAPCOS LIMITED

ISO 9001: 2015

(भारत सरकार का उपक्रम)

जल संसाधन, नदी विकास व गंगा संरक्षण मंत्रालय

(A Government of India Undertaking)

Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

सं. 7/365/2018-हिन्दी | दिनांक : 17.12.2018

श्रीमती अर्चना गुप्ता
सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं
सदस्य सचिव
राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण
18-20, सामुदायिक केन्द्र
साकेत, नई दिल्ली

विषय: राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की पत्रिका 'जल विकास' का राजभाषा विशेषांक।

महोदया,

पत्र संख्या 8/15/2016-हिन्दी/15310-15414 दिनांक 18.10.2018 द्वारा आपकी हिन्दी पत्रिका 'जल विकास' का राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका की रूप-सज्जा तथा सामग्री संकलन अत्यंत आकर्षक है। श्रेष्ठ रचनाओं के संकलन से परिपूर्ण सुंदर साज-सज्जायुक्त प्रकाशन से जुटी टीम को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका के अंक हमें नियमित रूप से प्राप्त होते रहेंगे।

भवदीया,

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)

76-C, Institutional Area, Sector - 18, Gurugram - 122 015 (Haryana), INDIA

टिप्पणी एवं सुझाव

टिप्पणी एवं सुझाव

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की झलकियां

''जल ही जीवन है, इसका संरक्षण करें''

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

जल विकास राजभाषा विशेषांक समिति

अध्यक्ष

श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

संपादक

श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी

सदस्य-सचिव

श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा)

जल विकास www.nwda.gov.in पर भी उपलब्ध है

Jal Vikas can also be accessed at www.nwda.gov.in

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, 18-20, सामुदायिक केन्द्र, साकेत नई दिल्ली-110 017 द्वारा प्रकाशित

Design and Printed by Royal Press # 93101 32888